दरश काज गुरुदर्शन चेला। दरश काज कर कंथा मेला॥
देखत फिरें कीर्त्ति करतारा। योगी का आवें तो बारा॥
राजद्वार जो योगी आवें। जानहु जाय नरक नहिं पावें॥

जगत फूल फुलवार सम योगी भँवर उदास।
फूल बासके कारने फिरें जाय सब पास॥

योगी बात कहें अस नाहीं। जो तुम फिरो नगर के माहीं॥
जोतजो न औ गोरी कारी। तेहि कारन सब फिरें भिखारी॥
जो योगी दरशन चित लावें। सो कत फिरे नगर महँ आवें॥
यह पृथ्वी जस दल दल नीरा। फँसे तपा जस गयँद गँभीरा॥
देखें चंद्र बरन जो नारी। रहे न संत आश औतारी॥
लखि लक्षण बालक औलोने। योग औतार चहर के टोने॥
छूटैं योग जाप औ माला। तजैं ध्यान अरझैं दुख जाला॥

योगी दरश भिखार हुइ फिरें न बारहिं बार।
बैठ सो रहें सुचित सदा धरें ध्यान कर्तार॥

सुन गढ़पति तोहिंजसमतबूझा। तूने बरन तपा नहिं सूझा॥
दो नैनन देखत संसारा। तो कहँ लखन एक करतारा॥
कहो वह जोत कहां है नाहीं। जो हम योग करें मनमाहीं॥
तन कोठा मन योगी ताहां। बैठ सभा जानो मन माहां॥
योगी रहें जगत के माहीं। जैसे कमल नीर उपराहीं॥
तुम कहँ लखो दृष्टि कहँ ओती। घट घट महँ परगट वह जोती॥
तिरिया पुरुष पशू औ पाँखी। सब महँ वह जो सूझे आँखी॥

कहँ मानुष पंखी कहां का बनखंड का झार।
सब महँ वह परगट अहै अलख रूप कर्तार॥

तुम योगी बुधि हिये उपजाई। जो को करे तुमते अरझाई॥

काभा अथे कठिन सुन लीने। कन पावैं जो बिन गुरु कीने॥
छांड़ सो नगर मोर हत्यारे। औ कह कहूं जैस तोहिं जारे॥
चला तपा तब बीन बजाई। को यह लीन्ह रहे तब छाई॥
निकसा नगर छांड़ बैरागी। घर घर लाय चला पुनि आगी॥
हिये डाह टपकै चख नीरा। करकिंगरी रन बीर शरीरा॥
मन बावर तन दीप पतंगा। परगट गुप्त प्रेम कर रंगा॥

मन हुइ भँवर उड़ान तब हेरै भूमि अकास।
तन मन मिरग भुलान सो कहां बसै धौं बास॥

तबलौं शब्द हेर फिर आई। कर मींजै रोवै पछिताई॥
ऐ पति प्रान हेर मैं हारी। कतहुँ न देखा प्रानअधारी॥
भोग बिलास लखो सबठाऊं। कतहुँ न सुनो जवाहिर नाऊं॥
रहे पतार कि रहे अकासा। कीकहुं सिद्ध साधु के पासा॥
योगीरहे मूल हिये लीन्हे। देय न भेद प्रान बिनु दीन्हे॥
हेर फिरेउँ सिगरो संसारा। रहा एक तहँ मेरु पहारा॥
पर्वत है योगिन अस्थाना। तहां जो चले जाय कछु जाना॥

है नेरे अंतर कछुक अमी सजीवन मूर।
बिना भेद गुरुज्ञान ते अगमपड़े बहुदूर॥

तबलों पंथ हेर धन रोई। चाह गोरि फिर लीन न कोई॥
पीतम मोर तजे धौं माया। की गा पार निठुर बनदाया॥
धौं ममदेश सो शब्द सिधारी। हूं दुखमाहिं न लाग गुहारी॥
पूछौं केह पंछी ते धाई। को अस मीत कंथ पहँजाई॥
निकसी मंदिर छांड़ बौरानी। चंद्रबदन बन फिरै भुलानी॥
जहँ २ ठाढ़ होइ वह गोरी। तहँ तहँ डाह देइ चहुं ओरी॥
रक्त के आंसु जहांलो रोई। बिरह आग घुँघुची जनु बोई॥

विरह आयगा सकलतन उड़े पंख बुधिखोइ।
जेथिर रहे सो जरिगये उड़ेश्याम भये सोइ॥

करत पुकार फिरे बनमाहां। मिले न कोउ सँदेशी ताहां॥
भइ अधरात कुहक तब नारी। तेहिखन भा हिरदे दुखभारी॥
सब पंखी मन कीन अँदेशा। यह बन छांड़िजाय केहिदेशा॥
यह चोरी सिगरो जग जारा। लिये न चैन तजे न पहारा॥
बोला तब कोकिल ओ पीऊ। का बिरहिन तोरे दुख जीऊ॥
जेहिदुख रैन पलक नहिं लाइस। कस सूरत मन पंखिजगाइस॥
की बिछुरा कोउ मीत सनेही। की उपजा दारुन दुख देही॥

केहिगुन पंखिन कहँ जगे कह आपन गुनसोइ।
लाव पलक आँखी चहहिं प्रान दिहिस कसखोइ॥

कहत सो दुःख नैन बहे धारा। को अस बीर पीरलै धारा॥
को पर काज प्रान दुख देई। को परस्वारथकै यश लेई॥
कहूं बियोग सुनो जो भाई। जेहि दुख वार न पार सेराई॥
रह्यो उदधि महँ पिउके साथा। पड़्यो सुमेरु हरयों पर हाथा॥
मोहिं बटपार न परबत डारी। कैसे जिऊं हिये दुखभारी॥
की धौं कंथ उतरि गा पारा। की बोहित बूड़ो मँझधारा॥
की जिउ दीन कि भा बैरागी। को अस मीत जाहिमों लागी॥

को अस मीत बिदेश महँ पर पीरा हरलेइ।
कहेजाय दुख पीउते पियकी आन सुधिदेइ॥

सुनधन बचन पंख बैरागी। धीर बँधाय चले उड़िभागी॥
तनकी आग पंख भे कारे। करत पुकार सो देश सिधारे॥
कोइगे समंद भयो जलबासी। कोइ भा चील्ह सो स्वर्गपतासी॥
कोइ बन बन कोइ फिरै पहारा। कोइ दुखलैके पैठ पतारा॥

तरतर भूमि मुहेरें नागा। घर घर फिरें पुकारत कागा॥
चातक फिरें रटत पी पीऊ। कोकिल कुहक देइ बलजीऊ॥
चकई नित सरवर महँ पैरे। कोयल पात पात बनहेरे॥
सब तन फिरें पखेरु गन हाटक बिरहकी देत।
कासिम डाढ़े प्रेमके चेत कहां पल लेत॥

तबलौं पर्वत चढ़ा सो योगी। अधिक जराबन देखिबियोगी॥
देके ढांक पात सब कारे। डाढ़े जरें बिरह दुख जारे॥
तहां रैन पुनि लीन बसेरा। निशि कारी दुखभयो अँधेरा॥
पल पल बिरह हिये जो दागे। रोरो उठै घाउ अस लागे॥
ततखन कुहक जो कोयल टेरा। लाग्यो लूक बोल तेहि केरा॥
शीश उठाय बृक्षतन देखा। को तरुवर पर पक्षी बेखा॥
पूंछा को तरुवर उपराहीं। कस तोहिं चैन रैन पलआई॥
तेहितन लागोबान अस तेहिउरझे तनपांख।
कस बियोग तोरे हिये भयो निकस बनढांक॥

हां कह मोर जरे बैरागी। आगे जाय आग तहँ लागी॥
जरि भा चून सुमेरु पखाना। बचा न कोउ तहँ पंख उड़ाना॥
तिरिया एक मेरु पर कोई। जिन असआग जगतमहँ बोई॥
थोड़ी बयस बरन सुठि गोरी। जानि न जाय सुकेहिकी जोरी॥
सुरति अमोल मुरति सुकुमारी। फिरे सो डोलत शीश उघारी॥
रोवे आंसु रकत के राते। जरिगे बृक्ष मेरु भये ताते॥
सावज सिंह गये तन दागे। पंखी जरत प्राण लै भागे॥
हों तेहि दावा बश पड़े जरें सो नित तेहिशोक।
बन बन डाढ़ीवृक्ष तन जल जल उठै सो लोक॥

सुन सँदेश वह बिरहिन केरा। [illegible] रोय तरवर तन हेरा॥

तैं पंखी भय बिकल भोजू। जो परकाज किहो अस खोजू॥
हौं सो पुरुष वह जेहिकी नारी। भयअलोप मोहिकीन भिखारी॥
जब तैं गई सहों ते जोती। नयननरकतचुवत जनु मोती॥
खोयों जन्म रकत नल रोई। तोहिं असगुरु मिलानहिंकोई॥
सुन बौरी सो पांखी खोवा। काहू खोय न दोउ जग रोवा॥
अब जिन रोउ देखि निज जाही। धौलागिरि परबत पर आही॥

फिरै उघारे कंवल तन पियर भयो जस पात।
अबहुँ आव शीतल करसपरस पानि वहिगात॥

कह संदेश गई उड़ि पांखी। चला हंस उघरी जब आंखी॥
पंखी संग जो शब्द उड़ानी। प्यासे पास चली लै पानी॥
देखिस चढ़ वह मेरु पहारा। पलका पर छिटके सब हारा॥
खाय पछाड़ पड़ी भुइँ माहां। प्राण सो मोर गयो धौं काहां॥
शब्द बोल सुनि निकसी नारी। मिली धाय हिये छांड़ डकारी॥
अय मो प्राण संघात सहेली। कहँ मोहिं आन दीन्ह परहेली॥
तजि कैलास न देख्यों बारा। आन देखि मैं मेरु पहारा॥

गा अपराधी जीव नहिं भयो न यह तन छार।
तज नैहर कैलास पिउ पड़्यौं अकेल पहार॥

तोले शब्द डाह दै भेंटी। कर्म लिखा को डारै मेंटी॥
मात पिता केहि सुख तें पाला। बिधनै आन कैस दुख घाला॥
दुख परलो तेहि ओर न छोरा। बोहित आन बूड़ तहँ मोरा॥
कहां ते आन पड़्यौं तो पाले। जस्यौं सदा तोरे दुख घाले॥
बैठें रोय दोऊ यक पासा। घबरा ऊभ लेइँ दोउ सांसा॥
पूंछे लाग रहे पिव काहां। सुखते अहै कि है दुख माहां॥
मोहिं पापिन बिधनै अस कीना। पिउ अपने का सुख नहिं दीना॥

कुशल बोल सो पीवकी जासु आश घट प्रान।
दधि महँ अहै कि पास तुम कौन बरनभा भान॥

सुन धन तोर हरन भिनसारा। काहु न ऐस करै करतारा॥
तिरिया प्रान हरै बुधि खोई। पड़ै समुद्र न थांभै कोई॥
पुरुपन की साका सब छूटी। गुंग भये जानो विप घूटी॥
कंथ तोर नहिं जाय सँभारा। बूड़न लाग उदधि मँझधारा॥
मैं समझाय सो कंथ भिखारी। फेरी दीनी पृथिवी सारी॥
सब जग हेरि सो चढ़ा पहारा। आवन चाहत करो सँभारा॥
झार उतार सँभारो केशा। देखो आय कंथकर वेशा॥

पहिरो हार औ कंचुकी ओढ़ा शिरपर चीर।
आवन चाहत कंथ तौ बैठौ झांप शरीर॥

धन तन एक सँभार न पाई। तबलौं कंथ तीर भा आई॥
आयो भानु चन्द्र के पासा। देखी जोति रही तनसांसा॥
मोतिनहार पड़े छिनराने। बदन उघारि केश अरुझाने॥
होय गये एक ज्योति चखचारी। पिय तन देखि सकुचगै नारी॥
गड़िगै दृष्टि लाज भयजीऊ। का मोहिं देखिकहै अबपीऊ॥
तबलौं कंथ बांह गहि लीन्हा। कसधन शीशनीचनुमकीन्हा॥
बिछुड़ि बिदेश पड़्यो किमिआई। दुखिया दुख दुख लाय जराई॥

बांह गहत शीतल भई रकत आंस भे नीर।
रोम रोम तन जीवभा पल्लुह उठा शरीर॥

का मुख पीव दिखाओं तोही। दुगुण पाप सो लाग्यो मोही॥
कंचन मोर कलंक सो लागा। सहों न होय मुख भाग अभागा॥
तुम जानौ धन हनी महाथा। मांझ बिदेशरहै केहिसाथा॥
साथी मोर चहा सन राखा। साखी दिये ठाढ़ सब साखा॥

हौं सो रोय लखौं चहुँ ओरा। भयो सहाय देव तब मोरा॥
मोहिं अलख निज हाथ बचावा। निकट मोर कोउ दूत न आवा॥
देखौ ठाढ़ जों मुरति पखाना। इन बटपारन मोहि हेराना॥
जो कुछ दीनो कंथ तुम आपन लेउ सँभार।
रत्ती मांस जो तिलघटै दोष देव तेहिं ठार॥
दुःख न मान नारि हिय माहीं। तो निकलंक कलंकतोहिनाहीं॥
दुखो न लाग दई जो कीन्हा। है तू सती सत्य में चीन्हा॥
कै परबोध लीन्ह हियलाई। कंठ लाय धन धीर बँधाई॥
नखतन हार गूंध दिय लाई। राता रंग सो शीश ओढ़ाई॥
गा दुख मेटि पाप गा धोई। भयो हुलास फिरा रंग सोई॥
पिव धन भेंटि मेटि दुखटारा। भयो ललाट दुइज उजियारा॥
फिरी बास औ कँवल बिकासा। मधुकर कँवल भयो यकपासा॥
रोम रोम सुख ऊपजा दुखदारुण गा मेट।
कासिम सो दिन शुभघरी होय मीत मम भेंट॥
भे निश्चिन्त मिले दोउ मिंता। उपजी देश चलनकी चिंता॥
धन सुकुमार न चरन उठावै। पैग धरत कोटिन दुख पावै॥
पिव धन देखि सो कीनबिचारा। बिन बिमान कसचहतसिधारा॥
कहा शब्द तें बेगि सिधाओ। सब साथिन ते जाय जनाओ॥
धन बेवान आतुर लै आवैं। आवैं बेगि न बिलँब लगावैं॥
जाय शब्द लै प्रेम सँदेशा। जहँ जहँ फिरैं सो योगी बेशा॥
शब्द शब्द लै जाय सुनावा। जेहिजेहिसुनासोलौटिसिधावा॥
फिरे जो सुनत सँदेश सब सिद्धभये सबकाज।
बोहित फिर इक साथभे लाग सँवारन साज॥
तनखन बीर नाथ का घेरा। कीन्हेसि कौन्यो देशने फेरा॥

देखा चढ़ि प्रीतम की बाग्र । सून मँदिर पर लखी लपाटा ॥
देखि गुरू सो मुरति पखाना । रोयउठा मन देखि डराना ॥
योगी देखि मंडप सो बारा । चला नगर महँ कीन पुकारा ॥
जाय नगर महँ कीन गोहारी । आये दुइ योगी बटपारी ॥
सब योगिन लखि पाहन कीना । बंश तुम्हार क्षार कै दीना ॥
सुन सो पुकार पड़ा तन सोगू । रोय उठा घर बाहर लोगू ॥

मात पिता रोये बहुरि शब्द पड़ा जो कान ।
योगी बेष जो सुन रहा सो भा मूर्त्ति पखान ॥

सुन पुकार माता ढिग रोई । भइ बिन ज्ञान लाज गइ खोई ॥
निकसी रोवत शीश उघारी । को मम मीत जो लगै गोहारी ॥
कैं बटपार बंश मो मारा । दीपक मोर कीन अँधियारा ॥
यह जिव जाय तहां अब डारौं । औ घर बार सों जाय पुकारौं ॥
रोवत बेगि सो चढ़ी बिमाना । चढ़ी मेरु पर देय पराना ॥
होयगा नगर सोग औ सूना । भोलाशाह शीश तब धूना ॥
लागा घाव हिये महँ गाढ़ा । लैके खड्ग भयो उठ ठाढ़ा ॥

होय असवार तुरी पर चढ़ा सो धाय पहार ।
कटक जो पाछे जहां लौं लागी धाय गोहार ॥

चढ़ी धाय परबत पर सैना । मार मार कै बोलत बैना ॥
देखैं मूर्त्ति तहां चहुँ ओरा । रोय उठा सब पुरुष कठोरा ॥
तब सब घेरि भिखारन्ह लीना । छीन सो मार छार वह कीना ॥
उमँगी हाथ खड्ग औ सेला । मारनहार न पूंछै पेला ॥
तब सुल्तान सो ज्ञान बिचारा । यहि मारे को फेरन हारा ॥
पूंछा सुन योगी हत्यारे । तैं योगी कस योगिन मारे ॥
तैं तपसी होय पढ़त चलावस । कस अपना परलोक नशावस ॥

अबहूँ निठुर भिखारि तू बेगि सो तापसी भोर।
नहीं तो योगिन साथही प्रान जाय अब तोर॥

सुन गढ़पति जो भयो भिखारी। तबहीं मुयों क्षार शिर डारी॥
तुम मृत्युक का मारन चाहा। मरि भा चार मर्म्म तो काहा॥
पाप न कीन सो केहि गुन डरई। अधरम ताहि जो न्याव न करई॥
बिना विचार जो मारे कोई। तेहिंकर न्याव स्वर्ग महँ होई॥
जिनजस कीन सो तेहितस पावा। मैं अस लखा जबहिं हूं आवा॥
मीठ बचन निभरम बनलाई। चमकैं नहीं हिये सनकाई॥
बहुतक देखि स्वरूप लोभाने। बहुतक कर मारन कहँ ताने॥
जिव मारा चाहैं बहुत बहुत करैं तहँ बीच।
योगी जान न मर्म्म कुछ कैस होत धौं मीच॥

तबलौं वह गढ़पति की नारी। पैठ मँडफ जो पाट उघारी॥
देखी बैठि जवाहिर ताहां। भई निरखि सो अचरज माहां॥
पूंछै रोय हिये महँ लाई। केहिबिधि बारि मेरु पर आई॥
कै तुम कहँ परबत पर आना। कै मो बंश जो कीन पयाना॥
योगी कौन अहै यह तोरा। जैं घर बार नशावा मोरा॥
तैं जाने यह बंश हराना। तेहिकारन मोहिं मारेसि बाना॥
कहँ यह देश मंदिर सब मोरा। पायों आज करौं का तोरा॥
खोई दोनों दशा मोहिं रखो न दोउ जग ठाउँ।
अबहूं होय प्रसन्न वह तोहिं लीन्हे घर जाउँ॥

सुन माता को फेरन आवै। जन सर आग आप ते डारै॥
यहि कर करै सो वहि कर पावै। खादै गाढ़ सो आगे आवै॥
योगी न अहै अहै पिय मोरा। कियो ब्याह सो मिलियो मोरा॥
लै मो गौन सो देश सिधारा। तोरा बंश भयो बटारा॥

समंद ते मोहिं मेरु पर लावा। सत मोरा वह चहै मिटावा॥
सब योगिन मोहिं टेकन चाहा। तब करतार क्षार मुख पाहा॥
तुम मोहिं कहौ कंथ मो पावहु। मारौ प्राण जो मारन आवहु॥

जहां सत्य तहँ आप है जहां असत तहँ पाप।
जो औगुन चित लावही सो देखै संताप॥

सुनि सो नारि कंथ पहँ आई। मारत करगहि लीन बचाई॥
मारो जिन छिन लाओ बेरा। होय सो पुरुष जवाहिर केरा॥
सो बैठी है मंदर माहां। नहिं जानै धौं आई काहां॥
यहतो होय रूमपति भारी। वह कारन यह भयो भिखारी॥
पाहन हुये न सुधरे आजू। यहि मारे खोवहु दुइ राजू॥
जो बिधि कीन दोष का दीजै। दै बारी अपना कर लीजै॥
तब सुल्तान बूझ मन जाना। दीन्ह बारि जो होय अपाना॥

ज्वाल बुझाई देह तैं पैसो बाहँ गहि लीन।
लै सुखपाल चढ़ाय ते अलख चहा सो कीन॥

औ शशि कहँ बैठाय बिमाना। उलट नगर कहँ कीन पयाना॥
नूरमाह आवत सुन पावा। हुलसा तन जानौ जिव आवा॥
मीन सुना जब आवन पानी। निकस चली बाहर बौरानी॥
देखौं सुत आवत की नाहीं। डारौं प्राण पंथ के माहीं॥
धीरधरै नहिं आप सँभारे। बावर धाई बदन उघारे॥
सखी सो बांह गहे समझावैं। कर छिन धीर बार तो आवैं॥
चढ़ि के मंदिर देख पिय पंथा। आवत तपसी हौं तो कंथा॥

धीर न होवै पीव तन जेहि दरशन की चोट।
थिर न होय मन दरश बिन है नेरे की ओट॥

तबलों आय बार नियराना। भीतर मंदिर पंथ बिमाना॥

आई सखी जवाहिर पाहां। देखिरूप मोही मन माहां॥
दासी लगीं चँवर सर ढारै। हँसिहँसि लागीं बोली मारै॥
राज छांड़ि सो कियो भिखारी। देखै कौन हुलास दुलारी॥
तुम खोयो जो राज हमारा। हम लीन्हा हरि कंथ तुम्हारा॥
बैठि सबै जो देखौ आजू। सुफल न होय आप बलकाजू॥
बैठी सुनै उतर नहिं देई। दिन दश बात कोउकहि लेई॥

सखी आन सब बश भई चमक रहा सरछात।
अच्छा बोलन मारहीं समय पड़े की बात॥

योगिहि आन पाट बैठावा। रात उतार श्वेत पहिरावा॥
सबै आनि तहँ कीन जोहारा। पूंछै वही ब्याह का चारा॥
कौन बरन तुम कियो बिवाहा। राज हमारि भार महँ पाहा॥
अबसो ब्याह यहां पुनि कीजै। अन्त गवन को नाम न लीजै॥
लीजै राज काज घर बारा। जन चाहौ कहुँ अन्त सिधारा॥
तुम सब राज हमार नशावा। हम सुख दीन जोतुमकापावा॥
सुनि सो हंस उतर नहिं दीना। भइ निशि मँदिरपयानाकीना॥

आय जवाहिर निकट तब कहा कंथ सुननारि।
कहां कीजिये बश पड़े दीन्हीं ब्याहन बारि॥

बिनवन लागि कँवल करजोरी। तुम पिव भान दासि मैं तोरी॥
तुम तैं मैं दोउ जग उजियारी। तुम पर देउँ प्राण बलिहारी॥
यह हम तैंहैं अतिदुख डाढ़ी। छांड़ न प्राण डारि जो काढ़ी॥
लियो बियाहि जो इनकी बारी। तब यह होयँ अधीन तुम्हारी॥
हौं दासी जो लेहु बियाही। चलो सो औसर बेगि निबाही॥
पुरुषन मन महँ भर्म बिशेखी। करै सो काज जहां जस देखी॥
जैसे ज्वाल करन बश भयऊ। औसर गांठि ब्याहकरिलियऊ॥

सिंह न चाहे तरन बन औसर खाकर आय।
पुरुष सो ताहि सराहिये ह्वै निकाल बहिराय॥
हंस जो बचन भोर उठि माना। शोभा सबै ब्याह निजठाना॥
पंडितन आन घड़ी दिन दीना। वहसोदिवस सुफलसबलीना॥
दुःख भयो जो सुख कर काजू। घर बाहर साजे सब साजू॥
हरदी तेल बारि कर कीन्हा। मांगा दान दई दे दीन्हा॥
बागा आन दुल्हा पहिरावा। फेरा छात पाट बैठावा॥
सबै वही पुनि भये बराती। बैठे आन सो पांती पांती॥
पंडितन पाय बसीठ सो आवा। बेद पढ़ाय सो ब्याह करावा॥
सायतिभई उताहिली सुफल घड़ी निशिबाहँ।
भा ब्याह पल एक महँ केहु जाना केहु नाहँ॥
पुत्र सोग नहिं बाज बधावा। नहिं कोइ हँसा न कोई गावा॥
नेगिनका बहु नेग सो दीन्हा। और हुलास न एको कीन्हा॥
सभा सँवारि जो भोग जेंवावा। फिर अलोक सब ठांवसिधावा॥
कोइ हिरदय मा भयो हुलासा। कोइ वह सोग काल असडासा॥
भाइस्थिर निशि सेज सँवारा। चला दुल्हा भीतर सोनारा॥
आय सखिन सो शीश नवावा। लिहो राज योगी तुम पावा॥
कीरति कियो सखिन सब साथा। गई सो नारि लिये हथ हाथा॥
सेज सो बासक रात अस मँदिर कनकसोपान।
धन जानै सो पिव मिला पिवसो जान बंदिखान॥
सखियां सबै बारि पहँ आई। अभरन लगीं करन जहँताई॥
करि अस्नान सँवारैं बारा। अंग सुधारि रंग चोवा ढारा॥
बार बार गूँधैं गज मोती। टीका कनक नखतकी जोती॥
दृग अंजन नथ मूक सोनेला। श्रवण पांत गरे हार हमेला॥

मेहँदी हाथ कर कंगन कलाई। कटि ऊपर लट झबियां लाई॥
पायल पांव पैंजनी लोनी। धरत पावँ गतिभाव सलोनी॥
करि शृंगार बिरहिन पग धारा। चलीसेज पिवकी सोनागा॥
करि शृंगार जो कुमुदिनी चली भानु के पास।
यह अचरज देखा केहूं नाह नाह आकास॥
लै सब सखी आईं सोनारा। जहां सो भानु सोवतरतनारा॥
तब सो बाहँ गही बैठाई। सखिन छांड़िसब मँदिरसिधाई॥
मन सो गयो जवाहिर पासा। धन तन सेज न करै हुलासा॥
बोली नारि करो पिव माया। तुम मो छत्र भयो तो छाया॥
टेकौं चरन देउँ बलिजीऊ। केहिगुन बिहँसि न बोलो पीऊ॥
सुनधन बात कही ना जाई। भयवश आय न भोग सोहाई॥
मोहिं सोहाय देशका जाना। तपै सो देह दीन्ह बँदिखाना॥
मैं निज चहौं पयानका तुम चाहौ बश कीन।
कित हुलास बँदिखान बश कोटि राज जो दीन॥
भइमन शोच रहीपिव मानी। पाई राज कहो बँदिखानी॥
भोर उठौ जो करौ पयाना। को रोकै तुम सुनो अपाना॥
मोहिं जस रखौ रहौं तुम साथा। जहँ पगधरौ धरौंतहँ माथा॥
तो पिव बिहँसि कंठमा लाई। मूंदीकली रहस बिहँसाई॥
लाग्यो कंठ बिरहगा छूटी। टीका मिटा हारगा टूटी॥
बेधाहार औ मुक्ता बेधा। पिगा प्रेमरस पायो भेदा॥
धनजस प्रेम भरीरस चोखी। पीतमचाखि कीन तसतोखी॥
भयेधना जो अरगजा कंथ मिले की कन्त।
जिनरस चाखा पिरथमैं लखा प्रेमकर अन्त॥
उठा भान जो भा भ्यंसारा। सखियन सबै पैठि सोनारा॥

धन अचेत के चेत जगाई। उठरि नारि गइ रैनि बिहाई॥
उठी खुमार प्रेम मदमाती। है गइ बीर मिलनकी राती॥
सखियन गहि लै पाट बिठावा। मंजन कीन औ सूर पिलावा॥
अभरन कीन औ मांग सँवारी। राता पहिरि भई रतनारी॥
भानु जो भँवरकँवल दिशि आवा। संपुट गही निरखि बिहँसावा॥
बिकसा कँवल देखि पिव राता। सैनन सैन भई रसबाता॥

आयो बाहर निकसितब पुरुषन कीन जोहार।
कीजे राज सुचित्त ह्वै लीजे अर्थ भँडार॥

भोलाशाह आय सर नावा। धीरज दीन औ बात सुनावा॥
लीजे छत्रपाट औ राजू। सुखसब चाह देशकर काजू॥
शीश नवाय हंसकर जोरा। तुम ठाकुर मैं बालक तोरा॥
जेहिबिधि राखौ तेहि बिधि रहौं। अबतुम छांडि जानकिन चहौं॥
बैठा राज काजकर लीन्हा। तेहूं भिखारि धनीकर दीन्हा॥
सबनें प्रीति हंसरस मानी। कुछ अभिमानकीनसो जानी॥
धर्म न्यावते देश बसावा। मीठ बचन संसार लोभावा॥

राज करै तहँ दिवस कहँ रैनि जाय कैलास।
कँवलहिये सो सब गहै बिनवै दरशकी आस॥

सम्पुट कँवल कुमोदके आगू। भा बिवाह पिव परसन भागू॥
भोर कुमोद कँवल दिशि आई। मुंदीकली चहत बिहँसाई॥
पूंछै कँवल कहौ सत बाता। कस उदासचित चातुर माता॥
जस वह चीन कोउ तस जाने। घर बैठे जिनबन पहिंचाने॥
आवो अब पांसा दोउ खेलैं। चारयाम बासर हँसि बोलैं॥
एक पीव तुम हम दुइ नारी। देखैं कौन जीत को हारी॥
कंथ भोग सों जीत लगावैं। जीतै धन सो सेज सिधावैं॥

अहै उदासी कन्थ बिन कन्थ कहौ को देइ।
खेलैं जीत लगायके जो जीतै सो लेइ॥

सुन सो कँवल खेल मैं देखा। भरे नयन जस सरवर लेखा॥
तोहीं खेलकूद सब भावै। कस न हुलास करै जो पावै॥
सो तैं खेल चहत पिव लाओ। एकहार दूसर लै आओ॥
बाट चलत पिव लूट मचाई। कातोहिं शोच जो हार गँवाई॥
मैं तेहि बहुत योगते पावा। कितचाहौं तेहि हार गँवावा॥
मैं केहि कंथ जीत महँ लाऊं। एकहार दूसर कहँ पाऊं॥
एक कंथ मोहिं और न दूजा। सकैप्रान सो तेहिकर पूजा॥

एक रैन सोयसि नहीं बिहँसि पीवकी नार।
ऐस न जानसि औरही तेहिधौं कौन पियार॥

सुनौ कँवल तुम कहारिसाई। हँसीकाज मैं बात चलाई॥
को आपन पिव जीन लगावै। शोच हिये बैराग मनावै॥
मोहिं आपन चेरीकरि जानौ। बातकहे कुछ दुःख न मानौ॥
अब आवहु खेलैं चौसारी। हम चेरी तुम छत्र हमारी॥
तबतो कँवल लीन कर पांसा। बैठी अस्थिर जीतकी आसा॥
दोउ आगे चौसार बिछाई। चीन सखिन तहँ दीन हराई॥
प्रथम कँवल जो पांसा डारा। जगबांधा तब पावँ निकारा॥

कँवल जो भाषे सत्तरह पड़े जो पांसा सात।
खेलमाहिं दोउ चतुर कोऊ न दुइमहँ घाट॥

कुमुद रही आठ दश भाखी। जगबांधी पुनि भोर की राखी॥
तीन कहत तेरह जो पड़े। पके नव काचे के धरे॥
कँवल खेल जो होय न कांचा। नव बारा पूग जगसांचा॥
मांगे आठ अठारा पड़े। बांधे सत्य सत्तग धरे॥

कांपि कुमोदिन केर सहेली। जीता चहत सो प्रीति अकेली॥
कहा कँवल तुम पांच पचासी। सब खेलैं रानी औ दासी॥
मैं सो अकेल एक तब खेलौं। जो जीतौं सबकी सब पीलौं॥
तौ मैं नारि सयानि जब जुग बिछुड़े नहिं देउँ।
जब जानौं चौसार महँ जीति चार जुग लेउँ॥
उठी कुमोद जो खेल उठाई। को जीतै उनकी चतुराई॥
एक सरूप दूजे अतिज्ञानी। कसपिवतजितेहिहमरसमानी॥
आप चली अपने कैलासा। सखी छांड़ि सब कँवलकेपासा॥
कस सखियन तुम सेवा कीन्हीं। पैपी सहौं होय जिन दीन्हीं॥
जो यह पास कँवल के आई। तो वह कोय न दूसर जाई॥
तो सब सखियन रस बहुतेरा। सेवा करैं अधीन शरीरा॥
आप सखिन हँसि करै ठठोली। वह अकेल हँसि मारै बोली॥
धन अकेल परदेशमहँ पड़ी जो बैरिन हाथ।
कंथ पराये बश पड़ा लेइ कौन बिधि नाथ॥
पड़ा बिछोह मंदिर के माहां। निकट बसै पै मिलै न ताहां॥
बैरिन सखी रहैं सब साथा। औभा नगर देहिं धुनि माथा॥
पिव पहँ चली जाय नहिं पावै। निशि बासर धन रोय गँवावै॥
यक दिन रैन भई निशि कारी। रोवन लागि सेज पर नारी॥
पड़ी अकेलि बिनवै करतारा। कित मोहिंआनदईतोहिंडारा॥
तिन पिव मिला हरा घर माहां। हय पट ओट न जानौ काहां॥
केहि बिधि रैन बिताऊं कोई। सेज काल आंधर अस सोई॥
चारि पहर युग चारि भे घड़ी बरस पल मास।
बज्र पहाड़ी रैनि भइ अंधकूप बनबास॥
अन्त रोय निकमी तब नारी। चली लखै पिय को सोनारी॥

तबलौं हंस चाह सुनि पाई। मांगि पान भन बैठि बुलाई॥
बिनिया हाथ लिये कर झारी। चेरी बरन आय सो नारी॥
हिये लाय पिव धीर बंधावा। पोंछे आंसु निकट बैठावा॥
तन तन भीर भयो दिन चारी। मन मन एकजोलख्योनहारी॥
तबलौं रहौं बांधि मन धीरा। जबलौं आवै मीत गँभीरा॥
कै परमोध मंदिर बैठावा। जागत दो पल रैनि गँवावा॥

तबलौं साथी हंस के साजि बिमान उभार।
कोउ जागत सोवत कोऊ आय निकट तेहिबार॥

बैठि मंदिर लय सिद्ध सहेली। हुलसै पानि पाय जस बेली॥
भइ निरमल गइ ग्रहण गरामी। दुइज भई जस पूरणमासी॥
निकसि हंस आये दरबारा। मिले मीनभा दिन उजियारा॥
भोलाशाह तहां चलि आवा। आदर कीन सबै बैठावा॥
कहा हंस तुम होउ हुलासा। लेत तुम्हार आय सब पासा॥
बोहित तें सब बसत निगाऊ। नेहचों राज करौ चित लाऊ॥
कहा हंस सुनि देश पछाता। मैं इन टारि कह्यों नहिं बाता॥

आये मोका लेन का लै बिमान ओ खोर।
सो आज्ञा अब कीजिये गौन चलैं उठि भोर॥

सुनि सो गौन भवा मन ताता। हंस तुम्हार कि यह नहिं बाता॥
घर बाहर राजू तुम लीन्हा। सो कस छुवा आगतेहिदीन्हा॥
आय लीन घरपै फिर जानहिं। आपन गौन कहौसो मानहिं॥
पंखी रहैं ती घर इन केरा। जो बोलैं तेहि रैनि बसेरा॥
सुनसो हंस मीर तेहि कहा। यहां का भेद कठिनअसअहा॥
दीन बियाहि बारि बरिआई। अब नहिं दीन गौन कहँजाई॥
सुनियह बात मीर सब भाखै। देखत गौन रहै का राखै॥

भोरबाट की नाह यह की मम नहीं ललाट।
की यह ठानौं बलाय यों केहिलग लागैंबाट॥

कम चीनके जहँलग मीरा। भय यकमते संभर यकतीरा॥
भोग न कीन न अन्न उतारा। बैठे छेंकि सो वार दुवारा॥
भोलाशाह सोकटक बुलावा। पलमा धाय वहां सब आवा॥
चारह फिरैं रैनिके माहीं। होयगा कटक छायचहूँपाहीं॥
नगर कोट औ भूमि सुमेरा। होयगा कोट लोह चहुँफेरा॥
घरकी कोट उवार दुवारा। छिनक बैठि सब चैलनहारा॥
देखैं जो जेहि होयकम भोरा। धौंकरतार होय केहि ओरा॥

घर घर पड्यो हिंडोल अस होनचहत कस भोर।
राखनहार एक दिशि चलनहार यक ओर॥

भोलाशाह बसीठ पठावा। सो चलि निकट मीरके आवा॥
कहा बसीठ न सँवरो भाई। जिन ठानौं यहि ठावँ लराई॥
तुम पंथी औ तपिस बटाऊ। यहिवर नीर गढ़ रावन राऊ॥
अपन बिचार कोउ नहिं जाओ। करो कटक अभिमानदेखाओ॥
लोभभंडार औ बादिये रानी। आतिश सेज छूट दरबानी॥
परनिन्दा की नौबत बाजी। चुगलीकेर कटक नितसाजी॥
पहरे फिरैं काम मतवारा। डंडबाज छीलैं बटपारा॥

बसै रामगढ़ भीतरै को तेहि सकै छुड़ाय।
अबहूं प्रान छोड़ावहु जाब न प्रान गंवाय॥

मीर कहा हम पूंछैं जीऊ। अंगुरी सूधि न निकसै घीऊ॥
यह गढ़पतिजो गढ़ अभिमाना। तपसी केर साजनहिं जाना॥
जरा कटक भा रावन क्षारा। कोटिदैत्य दै तपसी मारा॥
तपसी देखि अहै जनिजानो। अहै तरुण परतीति सोजानो॥

धर्म भंडार कहे नहिं आवै। ज्ञान लड़े तहंही चढ़ि धावै॥
सतकी सेज औ काम कटारा। नाम खड्ग ते भर्म सँघारा॥
बिरह आग दै कटक जरावैं। दृढ़ आसन ते मारि छोड़ावैं॥

काहो जाय भोला नृपै कस भोला गढ़ माहं।
जीव जाय टूटे गढ़ौ कौन रहै सो बाहं॥

तबलौं रैनि गई दिन आवा। भोला शाह आप चलिधावा॥
पूछा रूमी मीर बोलाई। आयो कहां कहौ सो भाई॥
कहौ सो गौन हंस करलीना। जस हमार तुम राज न चीना॥
जस हमार तुम राज नशावा। तेहि कर दांव आज हम पावा॥
तेहिते फिरौ जाव घर भाई। हमते गौन दीन नहिं जाई॥
तबलौं मीर बहादुर बोला। कस ना होय नाम तो भोला॥
हम जेहि लेन आय परदेशा। ते तुम दीन जाय नहिं देशा॥

दिह्यो ब्याहि निज बारिजो दिह्योसोगौनचलाय।
सातौ डोली कालशिर केहिके शीश बिसाय॥

भोला शह परखन दसदेखा। देखौ कहा होय इन लेखा॥
देखौं कार बारतें बारी। समहौं ठाढ़ करैं कस रारी॥
जो सब कटक कोप चहुंओरा। हांकै हांक पड़ी सब ओरा॥
मीर बहादुर लेकर सेला। चला शूर कहं लिये अकेला॥
औ कोपेउ सब बलवरियारा। पील चलै सब पंवरदुवारा॥
महसनयन निकसे जो खण्डा। झुरमुट भा अरभै बरडण्डा॥
हंस तबै करलीन कटारा। चला मन्दिरधनकरै सिंगारा॥

देखा हंसहि चढ़ा पुर गयो सो रोष बुझाय।
पड़े बीच महं बचौनी कह दोऊ दिशिजाय॥

पड़ै बीच जो पूरुष ज्ञानी। देहिं सेराय जरन जस पानी॥

मंत्री लाग सबै समझावै। कौकापर अब खड्ग चलावै॥
जो मारै तो छत्र अपाना। जो हारै तो नरक समाना॥
जेहिका बारी ब्याहिके दीजे। तेहिते कहूं रोष नहिं कीजे॥
दिहोगौन औ रोष बुझाई। होय अधीन यक टेक मिटाई॥
अंत तुम्हार काह पुनि जाई। बारी दोष जाय दुलगाई॥
भोलाशाह बूझमन लावा। रहिगा ठाढ़ जनौ ठगभावा॥

पड़ाहिंडोल घर भीतरै उलझगई सबनार।
तबलौं पैठा हंसघर लीन्हें हाथ कटार॥

गयो हंस मंदिर धन पाहां। लीन उठाय तबै गहिबाहां॥
चलौ नारि जो चाहौ प्रीती। नहीं तो आज तुम्हें परतीती॥
उठी सो नारि रही जेहिभांती। चलीसंग नहिं छणबिलमाती॥
चेरिन दूति गईं सब साथा। कोऊ न टेकि सकै पुनिहाथा॥
माता रोय पांवलै पड़ी। मांगेदिह्यो एक मोहिं घड़ी॥
कुछकर देउं गौन करसाजू। तेहिने मोहिं जगतमहँ लाजू॥
को राखै जो अहै तुम्हारी। बैठैका सखियां सबठारी॥

ठाढ़ी सखियां मिलनका मिलै न पावै बारि।
ऐसे कंथ उताहिली सुनै न कुछ मनहारि॥

लै गहिबांह बेवान चढ़ाई। चलीनारि कोउ मिलै न पाई॥
जो जहं रहा सो रहिगा ताहां। आपन जो सो अपने पाहां॥
होयं अकेल पिय संग सिधारी। रोय रहीं सब मीत पियारी॥
रोवन लाग सो रोवन लागे। कुछ न बिसाय कंथके आगे॥
घड़ी न लीन्ह न लायो बारा। भा असवार औ बाज नगारा॥
चला जवाहिर केर बिमाना। उड़ा जो शोर छूटिबंदिखाना॥
जो जाकर सो ताकर भयऊ। आपन प्राण सुचिन है गयऊ॥

चले गौन धनसंग पिव तजि नैहर कैलास।
जगह उदासी धनबिना धनहुलास पिवपास॥

चली नदान जो कीन पयाना। गौनसाज बाहेर बहिराना॥
हंड़ियां चलीं संग बहुनारीं। जन्म संघाती संग सिधारीं॥
बहु मुक्तन के चले पेटारा। कंसन कटक द्रव्य लै थारा॥
हाथी घोड़ चले बहुभांती। पठवन चली छतीसौ जाती॥
लाग बिमान जायें सब लोगू। सबके हिये शोच औ सोगू॥
पहुँचे जाय समुद के पाहां। बोहितसाज चढ़ेसब वाहां॥
द्रव्य बहुत जगदीन लुटाई। जेहिमित देव पारते जाई॥

चढ़े साज सब बोहितें सुमिरिनाम करतार।
ऐसे पन्थ अपार महं दैव लगावै पार॥

चले खेइ जो बोहित पेला। भागवन्त सो सुधहोय खेला॥
बोहित चली पवन की भांती। सहस कोस धावै दिनराती॥
उठी जो सुफल सोहावन बाऊ। बोहित चली पवन के भाऊ॥
उठै लाग जो लहर अपारा। उछलै लाग मगर घरियारा॥
तिरिया देखि मनै भरमानी। लहरअपार औजलहलपानी॥
खेवट धीर बंधावै साथा। धीर धरौ सुमिरौ जगनाथा॥
सुमिरौ ताहि जो खेवनहारा। तिन्हैं कुशल जो पावनपारा॥

बोहित पड़ी मँझधारमें जल हल गरू गंभीर।
कुशल जन्म जानौ तबै जब पाऊं वह तीर॥

उठै न बायू आवै आंधी। बहै न बायु धर्म्म की बांधी॥
मास चारि तहं निशि दिन धाये। बिधिनै खेइ सो पार लगाये॥
उतरे जाय मक्के के घाटा। पच्छिमदिशहोयनाय ललाटा॥
उतरे नारि पुरुष सब साजू। उतरे पार सुफल भा काजू॥

कीन्ह दान जो खोल भंडारा। धर्मवन्त होय निबहा पारा ॥
चल बजाय लै साज बनाई। नेरे भये मुलुक के जाई ॥
एक हुलास जो उतग पारा। दूजे लखा ठांव उजियारा ॥

कासिम बेड़ा धर्म का करते कीन जो हार।
धृग जीवन जग ताहि कर कुशल क्षेम भापार ॥

पहुंचे जाय मुलुक के पाहां। पाप हग निरमल भय ताहां ॥
कै असनान पंवर पग दीना। नायो शीश विनय बहु कीना ॥
चारिउ कुंभ गिला हिय लाई। खुलिगा हिये धोय गे काई ॥
छत्र अमोद का अभर छुवावा। तबहिं पास कैलासै आवा ॥
जो पंडितन वह अर्थ बनावा। सो सब कीन औ द्रव्य लुटावा ॥
दिन दश तहां सो कीन बसीरा। अगले पिछले भय सब भीरा ॥
अन्त रूम का कीन पयाना। अगमहुलास सो देशममाना ॥

धाये पावक पत्र लय जहां रूम सुल्तान।
आवै हंस सो सिद्धहोय जीत नगर नियरान ॥

सुन सुल्तान हंस नियरावा। हुलसा मनहुं जरत जलपावा ॥
हिये हुलास दरश रस जागा। उमगा अंग हुलसि गा बागा ॥
घर घर साजे बार दुवारा। चले आगे भादल असवारा ॥
आगू चला लेन सुल्ताना। तबलौं हंस आय नियराना ॥
उतरि तुरी तें शीश नवावा। गहि सुल्तान हिये में लावा ॥
पूंछा क्षेम कुशल व्योहारा। जान जन्म भानू औतारा ॥
पुरिखन आय भो शीश नवावा। फिरके सिंधु पान रसपावा ॥

कहा जन्म कासिम जगत भोर जन्म कितहोय।
बिछुड़ा मानुष फिरमिलै जनहुँ जन्म भासोय ॥

बाजत गाजत आयो बारा। शशि बेवान आगे उजियारा ॥

फेरि बजाय जो सजी बराता। चहुं दिशि भयो बरन रंगराता॥
मातैं धाय हरषि के लीन्हा। बिधिने ज्योति नैन भर दीन्हा॥
मंदिर मांझ जो गयो बेवाना। पैठा चन्द्र लिये घर आना॥
मोती महल जो पाट संवारा। तहां चन्द्र कहं लै बैठारा॥
एक पाट बैठी दुइ गोरी। छिटक गई घर माहं उजोरी॥
नखत सखिन मंदिर जो कीने। जानौ सबै गोद महं लीने॥

प्रथमै चावर रस भरे सूरहि चन्द्र जेंवाय।
पुनि पाछे लागें सबै आरत भाव कराय॥

बाजे लाग जो अनंद बधावा। भा मंगल घर माहौं छावा॥
कंचन दान होन जब लागा। दारिद छांड़ि देश ते भागा॥
हाथी घोड़ खुले जहंनाईं। भै असवार नेग दुनियाईं॥
तिरिया बरन भई रतनारी। जनौ जगत फूली फुलवारी॥
घरघर अनंद भयो जग माहां। रंग हुलास जहां सो तहां॥
नेगिन कर दारिद गा धोई। रहा न देन जगत महं कोई॥
धनीभये जिन हाथ पसारा। दारिद का जिन बार बुहारा॥

कीन्ह जो युग युग ऊपरे ना अस सुना न देख।
दीन्हा दान जो जगतकहँ ना लखिजाये लेख॥

आवनलागीं नगर की नारी। देखै चांद केस उजियारी॥
जासु बखान जगत महँ छावा। जेहिकी कीरति जग बौरावा॥
करत हुलास जो तिरियैं बारी। पठयन मंदिर जहां शशिनारी॥
पिरथम देखैं सखी सहेली। भूलगई कस चन्द नवेली॥
जो पट खोलि चन्द्रमुख देखा। जानौ भई बन्छ शशि लेखा॥
छिपैं स्वरूप देखि सबनारी। कस न करै संसार भिखारी॥
भीतर भा तिरियन पैठारा। हंस निकसि बैठा दरबारा॥

मिलन लगे जे लोग सब छोट बड़ा हित प्यार।
गाबिछड़न दुखमेटिके भा सुमिरन सुखसार॥

रही हुलास हिये मनलावा। नेहचों भयो भोग जब लावा॥
प्राण अधार कंवल जो पाई। देश पिता कर गयो भुलाई॥
पिउ धनपहँ धन पिउके बासा। हियें हिये मिलकरै तमासा॥
कबहूं लखै वही फुलवारी। कँवल संग रसकूद धमारी॥
गा नैहर सुखकेलि भुलाई। जो ससुगरि कीन सुखआई॥
हंस जो आपन देश भुलाना। मिला भोगरस रूप लोभाना॥
रही न सुध कुछ तन मन केरी। भयो चकोर चन्द्रदिशि हेरी॥

बरस दिवस बीता सरस मात दीन उपदेश।
बेटा भयो सुबंश तुम लिहो न आपन देश॥

सुनि सो बचन चेत तनजागा। बैरिनकेर सालहिये लागा॥
मना आन पुरुषतें कीना। तिन सबमता चलनका दीना॥
उठा मीत सबलीन्हे साथा। जायशाहका नायो माथा॥
औ करजोड़ि ठाढ़जो भयऊ। देखतशाह दहकि मन गयऊ॥
पूंछा हंस चहसका कहा। कौनसो काज करन का रहा॥
तबशिर नाय जो अर्थ सुनावा। तुमजगपति मोहिंपाट चढ़ावा॥
तुमहिं ताकि आयो जेहि काजू। पायों साज भयों जग राजु॥

आयसुहोय सुरीततें चलि सुदेश पुनि लेउं।
घर अँधियारा पिताकर का बिदेश चित देउं॥

कह सुल्तान - हंससुनिबाता। भावत तोहिं रूमकर छाता॥
मैं तोहिं बंश कीन चितलावा। काल चहूं शिर आत फिरावा॥
बैठो राजरूम चित लावहु। सेवक दुइ वह देश पठावहु॥
जाय जो कटै रूमकी धारा। बैरी तोर मिलावै क्षारा॥

शूर न आपभाय कहुं जाई। आंचहिते जग दियो जराई॥
बैरी जबहिं आंचते मरै। किन पुरुष तापर बल करै॥
हम निश्चिन्त होय दै राजू। लै गढ़रूम बिलखिका काजू॥
केहि अंतै बैरी वही जबहिं जाय वह दूत।
सो कस करै पयाम निज जेहि के बल करतूत॥
सुन सुल्तान जो बलख बुखारा। देश कठिन औ पुरुष जुझारा॥
जब लौं संग न होय गोसाईं। सेवककाज करै कहंताईं॥
मोमग अहै जन्म कर ठाऊं। इच्छा एकबार तहं जाऊं॥
जन्मभुम्मि असहोत पियारी। पंखी सुमिर चलै यकबारी॥
सो मोहिं अहै देश निजजाना। आज्ञा होय तो करों पयाना॥
पितु घर छांड़ि बिदेश जो छाऊं। होहुं कुबंश कपूत कहाऊं॥
जाय सो दीप पिताघर बारौं। आनि बुद्धि तो आन जोहारौं॥
तुमप्रताप देखों जगत थिर न रहौं केउठाउं।
यही सुमिरि आवै बहुरि एकबार घरजाउं॥
देखा हंस न रहै निदाना। चढ़ा बजाय अहै मरदाना॥
चाणयक हिरदै कीन बिचारा। है बड़ काज चहै बड़भारा॥
सब अमीर उमराउ बोलावा। धरा पान औ मर्म्म सुनावा॥
चढ़ा बलख पर हंस बजाई। जाय सुभंग पान जो खाई॥
मनवर मीर लखा मन माहां। यहिबिधि जावंजन्मभुमिपाहां॥
लीन्हा पान अभर पर कीन्हा। तो पहिराव शाह वह दीन्हा॥
बांधो खड्ग लिहो सब साजू। लाज न होय किहो अस काजू॥
लेहु द्रब्य चाहो जिती कटक रूम को साज।
अहै काज भारी यही किहो बोल पर काज॥
निकसा हंस बचन जो पावा। आपन साज सबै बहिरावा॥

निकसि ठाढ़ भये रान निशाना। बाजे धुन्द जगत सब जाना॥
लिखा पत्र चहुंओर पठावा। कटक सो जोति जगतमें आवा॥
जहंलग पुरुष संग के मीरा। लखि लखि पुरुष भये सब तीरा॥
साज बेवान जो निकसीं माता। चले देश कहं सुमिरि विधाता॥
अनवर मीर जबहिं बहिराना। निकसी सेना जगत सकाना॥
रहा गुप्त केहु दृष्टि न आवा। परघट भयो जगत सब छावा॥

नौलख पूरुष चढ़ा सब कोऊ न बलमा थोर।
आवै चला सो कटक सब सैन जुटी चहुँ ओर॥

बरन बरन औ बानहिं बानी। सातौं दीप जुरे सब आनी॥
बारहु कुल सब चले फिरंगी। सातौ गोरे जहंलौ जंगी॥
पूना मकर व केरि कहानी। बांधे समुद्रधार जी मानी॥
चीन फौज के गढ़पति गाढ़े। लाखम चोट चलावैं ठाढ़े॥
जोड़े हिन्द के बली प्रचंडा। होय सुमेरु करैं सौ खंडा॥
कौन दीप के जोड़े ठेकी। छार करैं गढ़पति फिर देखी॥
जोरे सिंध के औझक बांके। छूटे मीर तीर यक ताके॥

ईरां तूरां सबै मिलि भयो जगत यकठावं।
को यह योग जगत महँ सहौं जो रोकेपावं॥

चली कमान साज सुल्तानी। छूटै छार करै अभिमानी॥
कोटिन तुपक करोरन बाना। सहसन अजगर चलैं कमाना॥
लादे बहुत ऊंट औ हाथी। बहुत चले गाड़ी परबाथी॥
चली घटा हस्तिन की कारी। राती हरियरि छाय अमारी॥
निकसे तुरी छांड़ि कैलासा। चरणभूमि गर लाग अकासा॥
ताजी तुरकी कछुक इराकी। गरभी जोधर कनक बुराकी॥
निकसी कटक जो बक्तर डारे। स्वर्ग चढ़े तन तीरन मारे॥

बिदा भयो सुल्तान से जोर जो कटक अपार।
बजे नगाड़े दुन्दुभी कांपा स्वर्ग पतार॥
चढ़ि बजाय जो कीन पयाना। मानु अलोपा इन्द्र सकाना॥
ऊपर गगन इन्द्र अस कांपा। शेष पतार पूंछ गहि चांपा॥
हाली भुई भूधर थर्राये। डोलेगढ़ गढ़पति डरपाये॥
केहि पर उलट पड़ा करतारा। जेहिपर चढ़ा रूम दिलदारा॥
जेहि जेहि देश पड़ा दल जाई। बन बीहर सब छार मिलाई॥
परबत टूटि होयं सब छारा। जेहिदिशिअवनिचलेदलधारा॥
अगिला अन्न घास जल पावै। पिछला हाथ खींच नहिंआवै॥
नदी नार सूखे सबै खंडपड़े तेहि जान।
परबत होयँसो छारसम धरनउठे बलमान॥
यहिबिधिकरत जो चलापयाना। अगिलाकूच सो पिछलाथाना॥
तोड़त बन बीहड़ जो आवा। आय सो देश सरननियरावा॥
लिखापत्र पठवा पुनि आगू। साज सँभारि चेत अब जागू॥
शातिरखाँ का बेगि पठावा। लीन्ह सो पत्र बलखकाआवा॥
गयो सो खांक देन दरबारा। जाय शाह कहँ कीन जोहारा॥
दीन्ह पत्र औ अर्थ सुनावा। चेत सँभारि देशपति आवा॥
कह भयो राज किहो जस दूजे। देखो सोई शीशपर पूजे॥
देखा दोलामीर जो लिखी खड्गकी बात।
सहसशूरसम तोहिंकहँ भयो लोह असतात॥
देखत पत्र भयो जन ताता। जूझ सन्तभा जंगी गाता॥
गौने बार मूंछ थर्राने। देखत पुरुष सो सहूँ सकाने॥
अधरन सुख दोऊ रस गाता। बोलन लाग खड्गकी बाता॥
चढ़े सहाय रूमकी धारा। मनहुँ लूटि अब लेत भिखारा॥

जानि पड़ी जो उतरै घाटी। आवहिं मार मिलावैं माटी॥
मैं अब कटक कहां मन लेखौं। तौ मैं पुरुष रूम चढ़ि देखौं॥
मैं संसार खड्ग बलपावा। को अस शूर सहौं मो आवा॥

आवत आप जो बारघट देत्यों सौंपसो पाट।
अब चढ़िआवा रूमदल फूटैं लेत ललाट॥

शातिरखान कहा सुनु बाता। मिलिगे छार कोटि रसछाता॥
जेहिकर राज सो आवै चला। चलके भेंट जो चाहसि भला॥
नहीं तो पेल बुझाई तोरी। कौन सकै वह तैं कर जोरी॥
जैंठाकुर ते दूजे कीन्हा। रहा न जग महँ ताकर चीन्हा॥
बहुतक दिन दुइ रही बजाई। पल महँ दीन्ह सो छार मिलाई॥
आवै हंस लाख दलधारा। बांधि फेंट जो चहौ पतारा॥
जैसे बोल गर्भ ते भाखेसि। जानब तबहिं तहां गढ़ राखेसि॥

फंद गर्व बोलौ अब जूझ घड़ी नहिं दूर।
तबहिं तोहिं जानीपड़ै जब बांधौ गढ़ चूर॥

सुन सो बचन अधिक तन डहा। दूर आग तें बहु तोयँ कहा॥
दरश बसीठ न दिहौ दिखाई। पय तोहि गाग्न जूझ मचाई॥
कोउ गढ़लिये चला अब आवै। केहि गुन ठुमक २ बिलमावै॥
अहै सो राज शेल उपराहीं। जानै दूध पानसी नाहीं॥
खोल अस्त्र मैं बैठौं राजू। अब बांधौ फिर रूमके काजू॥
पुरुष बचन नहिं पाछे जाई। आज कहौं कल देउँ दिखाई॥
जो हम बांधि दान जिवदीना। सो अब चहै कोपगढ़ लीना॥

भोरहिभयो पयानकर चरन सरन अबदेउँ।
जो आवै गढ़ लेनका सोई खेत चढ़लेउँ॥

कोप बसीठ फेरि बैठावा। आप साज फिर बाहिर आवा॥

कोस बीसका कीन पयाना। सहौं रूमके ठाढ़ निसाना॥
निकसी कटक असूझ अपारा। भान छिपान उड़ी जगछारा॥
सातलाख निकसा दलसाथा। दूजे लिखा पत्र पुनि हाथा॥
लिखा पत्र औ खोलि भँडारा। टूटा पुरुष जगत जनौ तारा॥
देश देश औ जातिहि जाती। आवैं लोग सो पांतिहि पांती॥
गजनी ठठा भखड़ गुजराती। चला कँधार सो देखत पाती॥

धावा काबुल सुन सबै खबर भई मुल्तान।
रोह रुहेला सब चला नौलख साज निसान॥

खुरासान सुनतै उठि धावा। खुतन देश सगरा चलिआवा॥
सुन्दर नन्द कोर तुरकाना। आवा सबै पहुंचि नियराना।
परबत केर जहांलौं राजा। जिनके गरजे सब मल साजा॥
दखिन सो लेत समुद्र को घाटा। आय सिराज इराको बाटा॥
त्रियाराज औ देश हरेऊ। गढ़पति छत्रपती जग देऊ॥
यूनानहु मदान चलिआवा। समरकन्द कोइ रहै न पावा॥
लै फिरंग सब जगत नरेशू। रहा न कोइ जगत महं देशू॥

आये लागि गोहारि सब भूमि गये सब छाय।
निकसे पंखि पतार तें धरती कहां समाय॥

अतिदलजोड़ि जो कीनपयाना। चले अनेगिन बान कमाना॥
दिलवर खां औ काहरखाना। दोनों बीर सुमेरु समाना॥
तेहि बुलाय जो खड्ग बँधाई। आगू कै औ दीन बड़ाई॥
पुरुप सो लाख चार संग दीना। घाट गये का आयसु कीना॥
ठेकौ घाट न उतरै पारा। जबलौं मैं पहुंचौं लैधारा॥
तब पुरुषन दोउ शीश नवावा। जूझ काज का पान उठावा॥
राखै लाज सो वह करतारा। की मुल्तान संभारनहारा॥

आवै उलथाना उदधि सेवक बांधै बांध।
तबहि भार अंगवहि ठाकुर देहि जो कांध॥

चल बड़बोल खाय मुख बीरा। लाख चार लै पुरुष गंभीरा॥
कठिन साज लै बीर जुझाऊ। चला खेतरन रोपै पांऊ॥
तबलौं हंस घाट पर आवा। चाहा घाट उतारि बुलावा॥
तब सो शातिरखां शिर नावा। अर्थ बलख के बरनि सुनावा॥
कहा कि वह है अति बरियारा। तदपि उठा सुन नाम तुम्हारा॥
उठा कोप जोरा दल भारी। आवत रोकन बाट तुम्हारी॥
कठिन जूझ औ सांकर बाटा। उतरौ बेगि न छेंकै घाटा॥

दिलवर खां औ काहिरो आय कटक अगवान।
उतरि पार जीतौ तहां नहीं तो जिव जिव हान॥

सुनि गजपति जो संग हंकारा। का छेंकै मुख रोकनहारा॥
पुरुष बीर सब पास बोलावा। बचन बपीठके बरनि सुनावा॥
अनवर मीर खड्ग करलीना। चहै सो बेगि पयाना कीना॥
तब उठि मीर बहादुर बोला। तुम जग कीन्ह पावं कित डोला॥
पै यह देश हमार बुलारा। प्रथम जूझकर काज हमारा॥
माह अली माहरू जुझारा। दोनों बेगि उतारे पारा॥
सरिता बांध दीन जो बांधी। उतरी कटक चली बन आंधी॥

पांच लाख पुरुषान ते उतरि ठाढ़ भे घाट।
पाछे अपर उतार पुनि भइ सरिता महं बाट॥

काहिरखां जो सुना उतारा। कोपा सुनत भयो असवारा॥
है भल नाहिं जो उतरै पावैं। मांगै घाट हाथ कर आवैं॥
मारू साज दीन्ह तेहि पाछे। चला सो साजपुरुष दलकाछे॥
बीस कोस तें निशि उठि धावा। होतहि भोर घाटपर आवा॥

दूतन धाय कहा जहँ अली। आवै कटक बलख की चली॥
उठत अंडोर होत अँधियारा। पड़ै न दृष्टि कहुं भुम्मिपहारा॥
शाहअली सुनिभा दिल दूना। भा मुख राति जनौ दिलसूना॥

मारू बाजे बाजनो पुरुष भये मनचेत।
आजलिहैं इन्द्रासनै जीतै जूझ सो खेत॥

साजें पुरुष बरण बहु भांती। मेघघटा अँधियारी राती॥
बखतर झिलमटोप शिरडारी। चढ़ी घटा दल बादलकारी॥
हस्ती घोड़ लोह सब मढ़े। पुरुष जूझ है गिरिवर चढ़े॥
गे असवार मार दल साजा। हाली भुम्मि दुन्दुदलगाजा॥
कोस चार दहिने औ बांए। चलीसोघटा अवनि घनछाए॥
तबलौं आय सहौं नियराना। भये सहौं दल दुहूं निशाना॥
देखि निशान पुरुष मन कोपैं। रोपैं दल बाजैं है झोपैं॥

पूरब पच्छिम केरघन लागे करन घमंड।
कड़कन लगे नगाड़ तब चमकनलागेखंड॥

भये सहौं दल दूनो काजे। बजे बीर रन जूझ जो बाजे॥
बोले भाट बीच रन बाना। पुरुष चेत भये लोह समाना॥
निकसी खड्ग बीज की बानी। खनहिंहाथ खनगगनसमानी॥
अली अली की भई पुकारी। उठे तुरी भइ घन अँधियारी॥
बरसै लाग लोह चहुं ओरा। मिलगइ खेत घुमर घनघोरा॥
अरुझै बीरबीर बरबगड़ा। बरसैं तीर औ करकें खगड़ा॥
लोहै लोह उठै झनकारा। रकतै रकत देश रननारा॥

हांकै हांकै चहुँ दिशा छूटैं छूटैं मार।
कोउ काहू संभार नहिं आपन कौन परार॥

अरुझै खेत बीर मतवारे। समगरूर कोउ टरै न टारे॥

जूझठांव तेहीं अरझाना। जूझ जूझ सो तहां बिलाना॥
कोटिन खड्ग खोग उधराने। फूटे शीश खोग बहिराने॥
गिरे गयंद होयँ निज चूना। भारथ पर भारथ भा दूना॥
टूटें तुरी खेत असवारा। यक ऊपर यक करें संहारा॥
दोउ दिशि बीर जो पेलत आवें। खेत चढ़े कोउ फिरै न पावें॥
मारत तीर तुपक औ शेला। भा बैरिन बैरिन गजपेला॥

कटक अघाई छकित भे रुण्ड मुण्ड भयवीर।
को अब जूझ नेवारई चढ़े खेत दोउ मीर॥

माहमली लखिके हरषाना। भयो शूर तब लोह समाना॥
काहरखान सो देखि हँकारा। जीत न जायदेउं वह बारा॥
भारन पेल जो हांके हांका। अवनी पुरुष पड़े रन सांका॥
उतरे पुरुष दोऊ गे आगू। चाँचर रची खेल भा फागू॥
कोउ काहू धर धरन लपेटे। कोउ लिपटाय मीतअसभेंटे॥
कोऊ कहँ पुनि हनै कटारा। कोउ धरि खड्ग करै दोफारा॥
कोऊ चमकि चमकि बहिराहीं। कोई फिरैं उठें लपिटाहीं॥

रकत मांस कांदो भयो तन पिचकारी हेत।
खेलभयो चाँचर मनो रहस रचा वह खेत॥

दिलवर तबहि सहों है पेला। बांधहटे गहिलेउं अकेला॥
आवत माहरूप रनकोपा। बाजा धाय महों भा झोपा॥
उठनै पला तीर असमारा। मस्तक फोरि कंठ भा पारा॥
गिरि गयंद दिलवर भुइँ आवा। पहुंच हस्तिपर खड्गचलावा॥
कटिगे सूंड़ि हस्ति भहराना। माहरूप भुइँ है लपटाना॥
दिलवर तबहिं चलावा खण्डा। ऊरुन काटि बाज ब्रह्मण्डा॥
माहरूप तब हन्यो कटारा। लीन झिकोर मार भुइंडारा॥

माहरूप शिरघावभा भुइंदिलवर गिरिजूझ ।
काहरखां समहूं भवा मन बावरतू बूझ ॥
काहरखां जब बाज अखारे । माहअली तब भयो उतारे ॥
दोनों भरे वज्र अस वीरा । वज्रौ ते शठ कठिन गंभीरा ॥
सोहैं श्याम रक्त मुखराते । बाजे खेत जनो मधुमाते ॥
काहरखान गुर्ज सिर मारा । लगा शीश गा धरकि पतारा ॥
माहअली शिर चोट न माना । हना शेल होय साल समाना ॥
खैंचत शेल गई छड़ टूटी । तबलौं चोट आन शिर छूटी ॥
माहअली दै ओड़न टारा । गुरज मार तब हन्यों कटारा ॥
भई जूझ रनभारथ गा परलो अस बीत ।
काहरखां जूझा तहां माहअली की जीत ॥
भइ रनजीत आन बहिरानी । उलट बहा सरिता कर पानी ॥
माहअली चढ़ि तुरिया गाजा । बाजन जूझ जीतकर बाजा ॥
जो घायल तेहि खोज उठावा । जूझगये तेहि खोज न पावा ॥
सरिता रक्त बहै ज्यों नीरा । मच्छ कच्छ भये रुंड शरीरा ॥
हस्ती सूंड़ि भये घरियारा । रक्त नीर भा केश सिवारा ॥
बाघ सिंह बूड़ैं उतराहीं । लोम सियार सो लूटे खाहीं ॥
चील्हों गढ़ मिलि माड़ौ ताना । जोगिन अनँद ब्याह रनठाना ॥
कासिम खेत सनेह का लेत कठिन जो गान ।
धन्य पुरुष जो शीश का करै खोय मैदान ॥
गारन बीति खेत उठिजागा । वहीसो जूझ होय पुनिलागा ॥
कहीं तो रुंड मुंड तन धावैं । कहीं तो मार मार गोहरावैं ॥
कहिं घायल लोटैं मधुमाते । कहीं तो झूम रक्त रंग राते ॥
कोई तो धाय धाय लिपटाहीं । कहीं तो रोय रोय कहराहीं ॥

कोई तो रटैं पियासे पानी। कोई तो रक्त पियें ज्यों पानी॥
कोई तो लूटैं छार चढ़ाई। कोइ शिर ऊपर चँवर डोलाई॥
यक तो जूझगये कैलासा। एकन किया जन्म निजनासा॥

एक बजाय मलाय के जूझ भये नहिं चेत।
एक बजावत आवहीं वही जूझ के खेत॥

जो जूझै सो जूझ बिलाने। जो भागे सो तहीं पराने॥
दोलाशाह सुना दल भागा। जूझै बीर तीर अस लागा॥
करि मन क्रोध तपा औ कोपा। कालहिं बांधिलिहों कर भोपा॥
खोला लोहका अस्त्र भंडारा। बांधै लाग लोग बरियारा॥
लाखन झिलम टोप बहिराये। चुनि चुनि शूरनका पहिराये॥
लोहे सार मढ़ा दल सारा। कोप बजाय चढ़ा लै धारा॥
बान कमान सो साज चलाई। कोस बीसकी पांति धराई॥

सात लाख दल बल चढ़ा कठिन मारकर साज।
चला सो समहूं शूरमा होय रोकन केहिकाज॥

तबलों हंस उतरि भा पारा। घांटीलीनी नांव पहारा॥
पैठा आन देशके माहीं। फुकी आन निज दिशि चहुँमाहीं॥
माहअली तहँ जाय जोहारा। पायो पान भयो रतनारा॥
हंस जो उतरि मिला हियलाई। पायो मीत जीत सब पाई॥
पूंछा कुशल जीत कस पावा। माहअली तस बरनि सुनावा॥
भयो जूझ जैसे सब सुना। आगे है भारथ जो गुना॥
दोला मीर आवलै साजे। देखैं जूझ होय कस बाजे॥

कोसपचासकबीचगा पांच दिवसकेमांझ।
रनकी घड़ी समीप है भोर होय की सांझ॥

सुना हंस दुरजन नियरावा। सब पुरुषन को पास बुलावा॥

आवत अति दुरजन नियराना। यही जीत ते देश अपाना॥
सुनि सो लोह शूर हुलसाने। कोपे रन बरदंड सम्हाने॥
बांटे अस्त्र औ तीर कमाना। बांधि पुरुष भय बज्र समाना॥
दुइ लख पुरुष लोह ते मढ़े। बरन बरन जानौं घन चढ़े॥
देश देशके पुरुष जोझाऊ। चढ़ैसोबिहँसिबिहँसि के भाऊ॥
जेहि जेहि देशके बीर बखाने। तेहि तेहि बिहँसि चढ़े रनवाने॥

दुइ दिशि जंग फिरंग की बींचे बान कमान।
पाछे दै सुल्तान का आगे कीन्ह पयान॥

अस दल साज चले समुहाने। दिन दिन दोउ आवैं नियराने॥
चला सो दिवस चार सुल्ताना। रह्यो सो पांच कोस मैदाना॥
कांपी भूमि स्वर्ग चहुँ ओरा। कस धौं होन चहत रनभोरा॥
पछिमते उलट चढ़ा जगभाना। जग जाना परलौ नियराना॥
नारू उतरि भूमि पर आवा। कालकटकचहुँदिशि छिटकावा॥
योगिन घेर लीन मँडराई। धौं केहि रक्त पियें केहि खाई॥
पुरुष शृंगार बीर रन साजें। बाजन व्याह बीरके बाजें॥

भये समीपहि दलदोऊ लाग सांझ भौहोन।
आजकी रैनि संघार है भोर रहै धौं कौन॥

अर्द्धराति दल साजन लागे। कोउ जागत कोउ सोवतजागे॥
अर्द्धराति जो बाज नगारा। साजन लाग लोह दलसारा॥
लोहे झूल जो हस्ति ओढ़ाये। तुरी तरवारन लोह मढ़ाये॥
करिअसनान जो पुरुष जुझारा। पहिरैं लोह सुमिरि करतारा॥
आजुहि दिवस पूजि जो ताका। भैं हुलास करौं रन साका॥
होतै भोर चला दलसारा। घन उमड़े ह्वैगा अँधियारा॥
भिम दश साजि जूझ को धाये। गगन श्यामघनचलिबहिराये॥

समहूं दल दोनों भये देखै लाग निशान।
घिरिआये बादर घने बरसै बूंदन बान॥

छुटैं कमानैं घन घहराये। भू कांपी भूधर थर्राये॥
जल सो सूख तरवर उघराई। भा खलभल दोनों दलमाई॥
बरसै लाग अग्नि के बाना। धरती जरै सहौं भा भाना॥
हैगा धूमधाम चहुँ ओरा। मानौं झर परलै घनघोरा॥
दूजे उठै पवन लै झोंका। जानौ दून शूर लै फूंका॥
उदलैं लेतभये जनु झोला। भूमिचलै दलपान सो डोला॥
पुरुष पतंग भये जस पाता। रक्त सो रंग कटक भा राता॥

गिरिवर उपल उड़ान भे हस्ती तुरी पतंग।
धन पूरुष वै शूरवां जरत न मोड़ैं अंग॥

यहि विधिदोउदल उमँगतआवैं। पैग पैग पर चोट चलावैं॥
यक मुहँ छूटैं कोटि कमाना। सहस्र दलमल होयँ निशाना॥
मानुप उड़ैं स्वर्ग का धावैं। जानौ मेघ मांस बरसावैं॥
धन सुपुरुप निभरम मनमाहां। गोला ओला बरसैं ताहां॥
आये पील चढ़े मैदाना। रहिगे छूटन बान कमाना॥
निकमी सेल खड्ग औ खण्डा। पेलापेल भये बरखण्डा॥
दल उभरे बादल चढ़िआये। भा अँधेर घन सूर छिपाये॥

सात समंदर ह्वै मिले घुमड़ि भयो यकनीर।
पग्लौ लोहा लहरिभइ भये तो मंझ शरीर॥

बाजे दल दोउ बज्र पहारा। उठी लूक भा लोक अँगारा॥
बीरन भटभा झोंटक झोंटा। शूर शूर सों लेटक लेटा॥
बीरन बीर सो हांकी हांका। पुरुषन पुरुष पड़ी रनसांका॥
खड़्गें खड्ग उठी झनकारा। ओड़न ओर भयो घनकारा॥

मेलहि सेल आनि अरफानी। गोली तीर पड़ै जस पानी॥
घोड़न घोड़ सो लातक लाता। हस्तिहिहस्ति सो दांतकदांता॥
मांसहि मांस रुंडमा कादों। रक्त नीरभा सावन भादों॥

कोस पांचलौं चहुंदिशि लोह रक्त बरसाय।
लोथैं एकै रक्तमहँ बयठ एक उतराय॥

धन्य पुरुष जिन खड्ग उठावा। शीश गिरैं पै चलन न पावा॥
अगिला दल सब जूझ उड़ाना। पिछला आय चढ़ा मैदाना॥
तेरे उड़ान हस्त दल गाजा। जूझै लाग मीर औ राजा॥
हस्ती हस्त भयो गज पेला। पुरुषन मारन ठेलक ठेला॥
जूझे मीर गिरैं भुइँ माहीं। हस्ती गिरैं चिंघारैं खाहीं॥
रक्त खेत भा सरिता भारा। हस्ती हस्त बहे मँझधारा॥
जूझैं मीर बूझ नहिं आवैं। एक गिरैं यक पेलत धावैं॥

चारि पहर बीता दिवस आन पड़ी जगसांझ।
कटक अघानी थमगई हस्ति बंध रनमांझ॥

पड़िगइ सांझ मांझ रनमाहां। जो जेहि ठांव रहा सब ताहां॥
गा दल जूझन जूझ उड़ानी। सोन पतालहि घटिगा पानी॥
तबलौं जूझ न मेटै कोई। जबलौं दुइगा एक न होई॥
भइ निशकार मार भइ भारी। कम्पी कटक खलबली सारी॥
जो पै जीत हंसकी होई। तो हम देश न बांचत कोई॥
हय भल नाहिं राज तें जूझै। सिंघे सिंघ चले मन बूझै॥
जो जेहि ठांव सो तहां सिधारा। रहा न कोइ होते भिनुसारा॥

रेगें पुरुष सहस्र दल सकल मीर उमराव।
जिन अति राति उठावरन कितटारैं ते पांव॥

दोला मीर लखा जब भोरा। मादल तोर रहा संग थोरा॥

देखिसि पुरुष जो मीर गंभीरा। भा मन क्रोध बांधि सतधीरा॥
करग खड्ग बांध सत ठेका। सब जग एक साज मैं एका॥
रहा न जियत जगत मा कोई। जिन सत कीन जियाई सोई॥
तबलौं साथिन बेगि हंकारा। देखौ काह उठी अब धारा॥
आज सहूं होय साका कीजै। आजसो शीशबेंच जसलीजै॥
आज सो आन घड़ी नियरानी। आजसो शीशकाज सुलतानी॥

आज दिवस नियरान जस आज तीरभा पाट।
आजचलैं मुख रातके लेय जस बेंच ललाट॥

अस मन जान भये सब एका। रोंपा पांव परन जेहिं टेका॥
तबलौं भयो हंसकर झोंपा। आवैदल चहुंदिशि रनकोपा॥
दोलामीर जो खड्ग निकारी। खींची खड्ग भयो भयभारी॥
जेहिदिशि हंस तेहीदिशिधावा। बीचहिकटक अवधवितमावा॥
शातिरखान तहां अरझाना। संघ संघ अरझै मयदाना॥
खेलि फाग जस चांचर होरी। अंत गिरे लय अपनी जोरी॥
बाजे धाय जो हस्ती कारे। जानु मेघ भा खेत उतारे॥

जूझपड़ी जब जंग अति दीन फिरंगी आग।
सहूं धसा दल शूरवां चला अंत सब भाग॥

जंग फिरंग ठाढ़ दल दोई। आगे चला पेल दल सोई॥
मगरिब केर आन दल बाजा। छिनयकथांभ रास घनगाजा॥
पुनि सो चीनके गढ़पति लागे। तेहिरण टारि चला पुनिआगे॥
कटक सो जूझ गई कहुंनाई। पांच सहस ते पहुंचा आई॥
टारत दल औ पेलत बीरा। पहुंचा जाय हंसके तीरा॥
भये सो रूमी मीर उतारे। बाजै बीर सों बीर उघारे॥
खड्गहि खड्ग औ सेलहिसेला। शूरन शूर पड़ा रन खेला॥

ओड़िन चुके जब हाथ से खड्ग सेलगे टूट।
भये सो झोटे झोट तब पड़ी कटारन चोट॥
यहि विधि जूझपड़े रनखेता। सब बौरान भये मन चेता॥
यक तो धरिधरि धरनि पछारैं। यकतो हनि हनि छोरनमारैं॥
यक तो धरि धरि तोड़ैं हाथा। यक तो धरिधरि फोड़ैं माथा॥
यक तो हनिहनि खड्गचलावैं। यक तो खमखम धरनी आवैं॥
यक तो चढ़ि चढ़ि काटैं मुंडा। यक तो दलदल माहीं रुंडा॥
यक तो आपन शीश लपेटैं। यक तो लूटैं छार समेटैं॥
यक तो गिरैं उठैं फिर धावैं। यक तो पड़े खेत घेरिआवैं॥
एकते एकै रन गिरा सब जग साका कीन।
रह अकेल ढोला तबहिं खड्ग हाथ कै लीन॥
बहा जो खेत रक्त की धारा। तेहि बिच पेलि तुरिवैं डारा॥
भा चहुंदिशि पुरुषन का धावा। जानौं संग कोटिकै पावा॥
जेहि दिशि पड़ै पेल तेहि मारैं। मनौ सिंह गजयूथ बिडारैं॥
भोर सो ठाढ़ खेतपर होई। सिंह सहूं पग धरै न कोई॥
हंस कहा यह जीव न मारो। घेरो बांधि बंध महँ डारो॥
सुनि यह बचन हंसभा क्रोधा। को यहि योग जगतमहँजोधा॥
हौं सिंह हंसपती कहँ देखौं। दूसर पुरुष काह मनलेखौं॥
हँसि बालक मारौं कहा अहसि बलख पतिबार।
आज जूझ मों मोहते चढ़ा साजि जो धार॥
तब भा सब रोमन कर पेला। पैठा तब निज सिंह अकेला॥
बहुतन मार दिये बिड़राई। भा सो ठाढ़ खेतपर आई॥
तब बाजा अजबर बरबरडा। आवैं लीन चलावैं खण्डा॥
पड़ा जो खेत अकूझा मारो। कोइ न सहाय करै बरियारो॥

प्रथमै जूझि भूमि मा परे। पुरुष दोऊ धरती ह्वै गिरे ॥
अनवरकेरि खड्ग गै टूटी। दूजे ओड़न गइकर छूटी ॥
दोलामीर जो खड्ग चलाई। ओड़न काटिके सेल बहाई ॥

रकत बहाह्वै सरितबर मांस खेत भा कीच।
दोनों फँसे गयंद अस रकत मांस के बीच ॥

तबलौं मीर बहादुर धावा। पाछे टारि खेत पर आवा ॥
दोलामीर तबहिं वहि देखा। तड़पा लौंक बीजकर लेखा ॥
दै दै ओड़ जो छूटै छूटा। दुइमा एक चहै भुइँ लूटा ॥
जबलौं घड़ी निकट ह्वै आई। मीर बहादुर सांग चलाई ॥
बखतर फोड़ पेट मैं पारा। निकसी अन्तरक्त बहिधारा ॥
स्वर्ग की आंत ऊबका घाऊ। महूं लड़ै नहिं रोलैं पाऊ ॥
पग उठाय आगे करधावा। गिरा मुर्छिके काल जो आवा ॥

कासिम जो जसकै मुये मुये पुरुष सो नाहिं।
तनअलोप भा जगतते यशजीवै जगमाहिं ॥

गै साका जब आयो खेता। बुझगै जूझ पड़ी रन रेता ॥
जबलौं प्रान दीन नहिं बाटा। पुनिकोइ लेब जो लेउ ललाटा ॥
धन्यपुरुष जिनबोल सो लीना। बोल न दीन प्राण पै दीना ॥
सात द्वीप लै चढ़ा बजाई। एक खेत महँ गयो बिलाई ॥
कै सब साज रक्त महँ बूड़ी। होयगई छार पवन संघ ऊड़ी ॥
बहुत बजाय गयेमिलि छारा। बहुत बजावैं ठाढ़ नगारा ॥
बहुतन राज काज जिव खोवा। भूनन बीज वही तन बोवा ॥

बहुतक जूझि निराश भे बहु हुलसैंरनजीत।
कासिम कौन हुलास वह जहां जूझकीरीत ॥

गादिन बीत जो जूझ बुझाई। पुरुष गये रहिगै पुरुषाई ॥

होयगा रक्तमयी संसारा। मग्हा भये पुरुष बरियारा॥
जेहि शिर शीश सँवारैं पागा। तेहि शिर टोंटन मारैं कागा॥
जे जगमहँ सिंह शूर कहावैं। तिनका लै जंबुक बिसलावैं॥
भय भारथ औ गई तज दूजी। इच्छा जो जाकर सो पूजी॥
पूजीमन ना रोकी आसा। योगिन की गै तपन पियासा॥
जहां लौं गढ़ सो खाय अघाने। बाघ सिंघ जंबुक उतराने॥

हताराज जेहि कर बहुरि भयो अंत तेहिकेर।
कासिम दुरजन गर्भके दिया जार नहिं फेर॥

जीता हंस जो दुरजन मारा। चला सहूँगढ़ ताकि बुखारा॥
भागवंत रन जीत सुभागा। दुरजन भागि लंक अस लागा॥
वृक्ष फिरान पान उधराने। छुटिगये देश देशके थाने॥
टरिगा जहां सो तहँ पराना। जो जेहिठांव सो तहँ लुकाना॥
दोलामीर की एक सहेली। लै बालक सो भाग अकेली॥
नांव सो कमरखान तेहि केरा। गयो हेराय न काहू हेरा॥
नांघि पहाड़ भयो थिर जाई। बलख तें दूर चीन नियराई॥

फिर सो राजा देशकर भयो देश फिर रात।
गये सो दुरजन देश तजि छांड़ि पाट औ छात॥

भयो हुलास देशगढ़ जागा। आय सो लोग जोहारनलागा॥
जहँलग देशपती पति देवा। लागे आनकरन सब सेवा॥
देत जो पान बँधावत बीरा। आयो नगर बुखारा तीरा॥
दान जो देत औ बहुकरमाहां। पैठा जाय नगर के पाहां॥
चहुंदिशि लोग जोदेहिंअशीशा। युगयुग राजअमरअहिशीशा॥
पैठा कोट बैठ सो पाटा। फिरा छत्र जगमग ललाटा॥
दिन दश बैठि पोढ़कै थाना। भोर बलख का कीन पयाना॥

जेहि दिशि धावा भाव कहि फिरा सुखी तेहि पंथ।
दुख बीते पावै सुखै कहै सो बेद गिरंथ॥

गयो लखन बन घाट औ कूपा। फिरा सो देखत फूल अनूपा॥
जो सरवर सूखेभर आने। सो देखे जलथल उमड़ाने॥
जहं जहं मनुष न पावतपानी। तहं तहं खातचले गहिमानी॥
देत सो ठांव बसावत गाऊं। नेरे भयो जन्मके ठाऊं॥
सुमिरा आपन देवगोसाईं। जब लैंमीत मीत दुनियाईं॥
नगर कोट सब गुवालिपावा। सुनाजोनिकट प्रानपतिआवा॥
जानौ जरत मिलाबहु पानी। उकठी बेलि फेरि पलुहानी॥

निकसे लोग सोलेन कहँ रतनभेंट लै थार।
तिरियां शीश कलश लिये गावतमंगलचार॥

जबहीं बलख आय नियराना। जनौ ब्याह दूलह घर आना॥
अग्र बेवान चन्द्रकर राता। पाछे आवत संघ बराता॥
पैठा नगर मांझ जब आई। लागा कंचन जल बरसाई॥
पुरका लोग निछावर धारै। कनक फूल हाथे ते मारै॥
चहुँदिशि मित्र जो रतन लुटावैं। सुखिया होय एक सों पावैं॥
दोनों हाथे लेत जोहारा। पैठा हंस पिताके बारा॥
मुई सखिन सो जी उठधावै। तिये बेवान गईं लिपटावैं॥

माता बैठी मंदिरमहँ लै सँघ कँवलकमोद।
बाजन लाग बधावबहु घरघर अनँदविनोद॥

बैठी मंदिर मांझ जो भाया। उपजी पर अपनेकी दाया॥
हिये लाय सब मिलैं सहेली। कर विलाप कितरह्यो अकेली॥
तब आपन दुख रोय सुनावा। मैं दुख कीनते यह सुखपावा॥
धन करता जेहिं देश देखावा। नाहिंतो कौन गवाफिर आवा॥

आई सखी कंवलकी सेवा। देखि रूप भईं पंख परेवा॥
जैसे भान तैस शशिगोरी। सिरजी कनक पदारथजोरी॥
आरति करैं निछावर ढारैं। शशि के दरश भान लै वारैं॥
सेवाकरैं सहेलियां करैं आरती नारि।
चीन कोऊकी गोइ दोउ निकसंलखिससुरारि॥
आयो हंस मंदिर मँझियारा। पितुका ठांव भयो उजियारा॥
सखिन सो धाय भान रसपावा। गहि गहि बांह हियेमहँ लावा॥
सबतें भेंट रहस बिहसाई। देखै लाग मंदिर निरथाई॥
देखा मँदिर भंडार सो नारी। देखा ताल बाग फुलवारी॥
भई जो रैनि चन्द्र पहँ आवा। कर गहि हिये हुलसि बैठावा॥
फूलनसेज संवारि बिछाई। मिली सनेह चन्द्र हियलाई॥
बहुरिके सूर गाह पहँ आवा। बैठि निकट बहुधीर बंधावा॥
फेरसो आवावारकहँ निकसि भान परभात।
बैठा पाटै पिता के फिरा शीशपर छात॥
करै लाग सब भेंट जोहारा। रूमी मीर औ बलख बुखारा॥
सबकहँ पान फूल बहु दीन्हा। औरनकहँ आदर बहु कीन्हा॥
राज काज सब गीरह दीन्हा। कटको भार अली कहँ कीन्हा॥
माहरूप का द्रव्य भंडारा। औ गुल बदन पाट रखवारा॥
घरघर बैठिगये सब थानी। टेकैं शीश राव और रानी॥
फिरै लाग चहुँ खंड दोहाई। देश देश कहँ कटक सिधाई॥
बरसै लाग कनक दरबारा। भानु उवत जिमि सुख संसारा॥
देहभार सेवकन कहँ सबै जहां लौं मीत।
आपसो बैठा पाटपर राज करै निहचीत॥
अनवर मीर माम यक रहा। कीन जो काज जहां लौं अहा॥

देखा जन्म भूमि सुखपावा। तिन सुमिरा जिन देश देखावा॥
आय हंसका कीन जोहारा। सुफल पाट औ राज तुम्हारा॥
अब लखि फेरि पान जो पाऊं। जाउँ थान जेहि केर कहाऊं॥
वह सुल्तान जीव मन चिन्ता। वेगिसो जाय करौं निहचिन्ता॥
हंस कहां तुम रह हियमाहीं। मुखवें कहाजात सो नाहीं॥
देउँ जो पत्र धरयौं पगमाहां। करि अरदास कह्यौ तुम ताहां॥

स्तुति वरनि सुनायके शीशधरयो जेहिपाय।
आज मिलापरतापतव सुमिरत दिवस सिराय॥

पावा पान चला शिर नाई। मिला सो जन्म भूमिकेर भाई॥
रूम कटक लै रूम सिधारा। रहिगई वलख देशकी धारा॥
मीर बहादुर कटक संवारी। थांभा राजकाज सब भारी॥
बहुत कटक आवा संसारा। बहुत रहा आगे दरबारा॥
अदल नियाव कीन जहँ ताईं। सुखी भई सिगरी दुनियाईं॥
पंथी पंथ चलत सुख पावै। देश देशकी अस्तुति गावै॥
धर्म नियाव होय नितदाया। घरघर पूरि रही पुनि माया॥

धर्मवन्त जो राजपर सबसुख जगत सुढङ्ग।
बनबीथिन पूरुष फिरत हुलसे पंख पतङ्ग॥

निभरम करै लाग सो राजू। दिनदिनअधिक काजबहुसाजू॥
भांति भांति साजी चौपारी। वरन वरन बोई फुलवारी॥
बिच फुलवारि जो सागर भरे। वृक्ष अनेक फूल फल फरे॥
भानु तहां दिन बैठे जाई। कंवल पास सो लिये बोलाई॥
कंवल भानु दोउ बैठे पासा। करगहि दोनौं करैं हुलासा॥
प्रेमभरी बोलैं रस बाता। भानु के रंग कंवल रँगराता॥
कहेसि बिहसि जनिहोहु उदासा। चीन बिदेश बलख नितवासा॥

नारि हुलसि लागीपगन उठीहिये विकसाय।
हौंरँगराती पीवकी गा मोहिं चीन भुलाय॥

दिवस भानुसंग कंवल बिकासा। भई सांझ आयो कैलासा॥
दिन कहँ भानु कंवल बिहसावा। भइ निशि सेज कमोदके आवा॥
आयो सूर कमोद के तीरा। हिये लाय रस दीन्ह शरीरा॥
औ कर टेक सेज बैठाई। सुमिरि सो प्रीतिदेश तजिआई॥
हौं दासी दुइजग पिव केरी। जेहि विधि राख रहौं तस चेरी॥
तो पट खोल बोल वह नारी। तुम आयेहौं छली भिखारी॥
तब पिव ताहि हिये महँ लाई। दीन्ह तोख औ रैनि बिहाई॥

भोरहोत निकसारवी कंवल सुदर्श विकास।
बैठा आन सोपाटपर किरन छाय चहुंपास॥

निशिदिन रहस कमोद पहँजाई। नैहर कोउ सो गयो भुलाई॥
दोनों नारि कंथ रसपागी। पिवके दरश रहैं बैरागी॥
रहैं सो पिव आपन सुख सङ्गा। बातन बात भयो रस भङ्गा॥
सबै सङ्ग महँ कोटि सहेली। सहि नजाय पुनि सौत अकेली॥
एकदिन नार बैठि दुइतीरा। शीतल वचन औ आग शरीरा॥
मुख बिहसैं तन देखैं दोऊ। सब निरखैं मन परख न कोऊ॥
हँसिके बात जवाहिर बोली। बात कठिनपै कहेसि ठठोली॥

तुम धनिपढ़त सो देशकी भरी पढ़त तुम काहं।
बैठे कंथ सुपास तुम हम डरपैं मनमाहं॥

सुनिसो बात कमोद भइ ताती। कहो बात तुमहो मधुमाती॥
आनसो एक देशकी गोई। सुनि यह बात कहै का कोई॥
तुम केहि गर्व जो मारो बोली। मैं सो देउं सबै गुण खोली॥
केहिका छांड़िसोकेहिकाकीन्हों। मात पिता पायँन तर दीन्हों॥

चीनको दोऊ छार मिलायो । कंथ भिखारिके भीख मंगायो ॥
जो तुम मोहिं पढ़तके ठाना । करौं उघारिलेउ तुम थाना ॥
काहे तें तुम ऊंच कुलीना । काहेतें हम नीच मलीना ॥

तुम भूल्यो जेहि गर्वमां मोहूं सोतेहि की नारि ।
एक कहौ तुम मोहिंका कहौं सो सहस उघारि ॥

सुनिसो बात कंवल मुसकानी । पी हिरदय तबक्रोध रसानी ॥
एक कहत तें दशपकराये । गुन अपने सो खोलि सुनाये ॥
कैसे पढ़त चले तहं तोरा । सत्य सुमेर अहै जहँ मोरा ॥
माय तोरगइ पढ़त पढ़ाई । कैसे निलज रोय फिर आई ॥
तब बैरिन मोहिं डार पहारा । कैसानीर भयो जर छारा ॥
पिता तोरमोहिं पिउ बंद डारा । कैसा रोय रहा हत्यारा ॥
तैं कित पढ़त करै कहं जोगू । पै तोहिं उलट होइँ दे लोगू ॥

तैं बंद कीन्हा पीव कहँ मैं पिव कहँ जिवदीन ।
केहि सोनार बिलम्भनी कोकिलैं को हीन ॥

तबलौं उतर कमोदनि दीन्हा । पिव अपनेका चहा सोकीन्हा ॥
तुम जस अहौ कलैं उजियारी । जगजानै काकहौं उघारी ॥
चारहि पढ्यौ वेदभइ ज्ञानी । घर बैठे डास्यो जग छानी ॥
बहुतक भंवर पतंग लोभायो । अपनेकुलहि कुलीन कहायो ॥
काहू दीन्हों मैं छाप निशानी । कतहूं पठयो शब्द सयानी ॥
काहू दरश देव जिव लिह्यो । काहू लोभाय पास वश किह्यो ॥
एक बरात बोलायो बारा । दूसर रखियो मांझ सोनारा ॥

एक मिलायो छारमहं एक देवहिये खोल ।
दूसर होय तो जातगढ़ सकतन समुहे बोल ॥

सुनिसो कंवल अधिक तन डही । क्रोधभई पै करगहि रही ॥

कहेसि कि जनि अबशिरपरडोलसि । शशिनखत सहं कसबोलसि ॥
मोहिं करतार भाग अस दीना । तबमो कीरत स जग दीना ॥
औविधनै मोहिं आप निबाहा । भासो छार जो दूजे चाहा ॥
तैं अपने गुन कैसे छिपावसि । मसिलावसिमुखशीश उठावसि ॥
बारी बयस जो चांचर खेली । लैकर छार पिता मुखमेली ॥
बाट चलत धरलीन्हों योगी । कोइ बांचे कोइ रहा बियोगी ॥

वह निलज्ज जिन जाय तोहिं तैं निलज्ज असबार ।
बारेहि धरेसि भिखारि कहँ जियत न डारेसि मार ॥

तबसो कमोद डही तन जीऊ । खायो आपन औ का पीऊ ।
तुम आपन मुहँ रहौ संभारी । नहिं मुहँते मुहिं आवतगारी ॥
मा पिव प्यार रूप उजियारी । कहिनसकत कोउ बातउघारी ॥
सुनियह बात ठुमक गइगोरी । दीन्ह भिकोर सौतउठ मोरी ॥
पियकारण माथे बैठाई । माथ देत लागी संघलाई ॥
सुनियह क्रोध सखीउठि धाई । दोउ अरभीं गहि बांहछुड़ाई ॥
तबलौं कंथ मंदिर महं आवा । दोऊमकुचिपुनिशीश नवावा ॥

लीनबांहगहि दुहुंकी चले मुख आंस कपोल ।
पिवपोंछे हंसिहंसि उन्हें धनमुख अबतो बोल ॥

तो वह लीन हिये महँलाई । तुम शिरभारन रोस सहाई ॥
तुम्हरे मते लीन हम ब्याही । तेहिकर जन्म निबाहन चाही ॥
नृत्माह दिशि फेरै नैना । सैने कहा बोल जनि बैना ॥
सुखतें रहौ दोऊ यक साथा । जोहम आयसि हम तेहिहाथा ॥
पिवके बचन सुनत वह हारी । उठिआई बैठी सोनारी ॥
रूपा महल कमोदहि दीन्हा । मन्दिर रतनकंवल पुनिलीन्हा ॥
कै शीतल दोनों बैठारे । पुनि सो बोलाय मिलाई नारे ॥

मिलयदीनसमझायदोउरहसजोचातुरनाहं।
एक हँसी मुसक्यायके एकदिये गरबाहं॥

दोऊ मिलाय कंथ जब दीना। होइगे एक कोंव जिन कीना॥
बरस चारिगे करत हुलासा। कंवल ओधान भयो परकासा॥
गये नौ मास जन्म भा बारा। हुलसा नगर देश जग सारा॥
बाजे अनँद बधाव सोहावा। घर बाहेर सब माड़ौ छावा॥
दीन्ह हंस जो खोल भंडारा। बरसै लाग सोन दरबारा॥
देश देशके रंक भिखारी। होइ गे द्रव्यवन्त सोभारी॥
घरघर सबहीं रचा बधाऊ। अनँद हुलास भयो सबकाऊ॥

भीतर मङ्गल गावहीं द्वार लुटावैं सोन।
रहारंगरचि जगतमहँ चारिदिशा बहुकोन॥

पंडित धाय देश के आये। देखि जन्म लक्षण निरताये॥
भयो सुरूपवन्त अभिमानी। बारह ते तरुं बनी सुलतानी॥
काजानै कस करै बिधाता। फिरै बेग माथे यह छाता॥
मात पिता ते पड़ै बिछोहा। छूटै देश कि बाजै लोहा॥
शाह हसीन नाम तेहि राखा। जोकुछलक्षण लिखासोभाखा॥
पंडित दान रतन बहुपावा। दीनअशीशकिसुफलसोहावा॥
बहुतन सुना सबै सुख माना। बहुतन कहा अगमकै जाना॥

हुलसा बलख बुखार औ रूम चीन सबदेश।
कंपै बली बरोंड सब दुरजन मीर नरेश॥

कमरखान दौला कर बारा। भा सयान चढ़ि गीर पहारा॥
धावालीन पिता कर दाउं। कौन उपाय बलख महँ जाउँ॥
तबलौं लगा चीन कर कोई। तेहिसंघमिला आसमंचगोई॥
तेहिने अर्थ चीन कर सीखा। जो जो अर्थ हिये महँ लीखा॥

नगर कोट औ देश दुवारा। पूंछ लीन सब बरब उजारा॥
नावँ ठावँ बनखंड औ मीरा। राज रंक औ मीर उजीरा॥
बोली बान सबै सिख लीना। चीन की बस्तु बेसाहन कीना॥
धर्योबिहसि बेपारकर चीनकि बस्तुभँगाय।
चलासो बलखे देशकहँ छलके पैरलड़ाय॥
आयसो बलख नगर नियरावा। देत लखाव चीन ते आवा॥
आवा नगर पड़ा तहँ ढारी। जाना नगर चीन बेपारी॥
लोगन जाय सुआर सुनावा। चीन का यक बैपारी आवा॥
लीने मृगगाय बहुपासा। आवै मृग कस्तूरी बासा॥
सुनतहंस यह बेगि बोलावा। लयसोमिरगगाय चलिआवा॥
देखत हंस बोलावा पासा। कुशल पूंछ औ कीनहुलासा॥
पूंछी कुशल क्षेम सब केरी। राजा गब रानि औ चेरी॥
बोलीबोला चीनकी कुशल क्षेम सब केर।
तबनिजजाना हंस तेंहिबरनरूप कहँ पेर॥
कुछ पूंछा कुछ पूंछ न पावा। तबलौ कंवल सुबारि बोलावा॥
बारि बोलाय सो बैठक दीना। आदर चीन चही तसकीना॥
हिये प्रीति नैहर की पाई। पूंछै लाग ओट बैठाई॥
तुम आयो मो बीरन आवा। जो नैहर की बात सुनावा॥
पूंछा मात पिता कर भोगू। औ नैहर कुल आपन लोगू॥
पूंछी सब नैहर की गोई। तेहि संघ खेल सुमिरिके रोई॥
पूंछै पिता केर अगराऊ। पूंछै राज देश गयराऊ॥
सबकी कुशल कहावै नांव ठांव जब पूंछ।
सुन्योंरूम बहिनीतुम्हें तेहि गुनआयो छूंछ॥
कहि संदेश आयो जेहि बाटा। कहै भाग भुइं लाय ललाटा॥

अथ सुल्तान बलख में आवा। पैतोहिं देश जाननहिं पावा॥
मैं जान्यों तुम रूमैं माहां। नहीं पुत्र लौट्यों तुम पाहां॥
तबसों हंस सत्य वह कीना। देपहिराव मयाबहु कीना॥
कहा हंस तुम दूरते आये। जनजानो अबदेश पराये॥
लेहु बनिज चाहौ बैपारा। रहोछाय यह देश तुम्हारा॥
तब वहु शीश पाटपर लावा। मैंघर छांड़ि सुवर महं आवा॥

गयो समाय सो हियेमहँ पड़ा न दुर्जनजान।
कीन चहै करतार जो प्रथम करै विधिहान॥

मास एक रहा चित लाई। सब सेवकन लै कीन मिताई॥
सबको दास भयो अति कीना। सबके प्राण हाथ लय लीना॥
अन्त चलन का साज बनावा। आनि हंस का शीशनवावा॥
अथ सुल्तान चलों मैं देशा। आयों मिलै कहौ जो संदेशा॥
पै आयों वह मारग देखी। कांपै वही मर्म्म मन लेखी॥
एक कहौं की देश सिधाऊं। दूजे कहूं चरण चितलाऊं॥
मरूं सों बीत जाय जिव खोई। दोउदिशि अन्त न पावैकोई॥

एक प्रीति सुल्तानकी दूजे डर वह बाट।
तेहिकारनमैं कहूं अस बशनहिं देउंललाट॥

हंस कहा जोहै तुम रहना। आपन देश अहै का कहना॥
तुम असकोहै मीत पियारा। अस जानौ की देश हमारा॥
शेर बहादुर कहँ शिर नाई। है अच्छा दीजे तहँ जाई॥
जो परदेश जाय सो दीजै। इच्छा ते बहु प्रीति न कीजै॥
हंस कहै को इच्छा अहै। आपन अहै कहां सो वहै॥
चीन लोग अस काजय आई। को दूसर असमीत कहाई॥
हंस जान वह यह तो सांचा। दीना भानु काज भा कांचा॥

सेवक कीना निकट कर दीन खड्ग पहिराव।
पठवा आपन कालले लखा न छलकर ठाव॥

पायसिपान तेरेफिर आवा। भा सेवक सेवाचित लावा॥
द्रव्यवन्तभा साज संवारी। भा अमीर बैरिन महँ फारी॥
सेवा बहुत हाथ तेहि दीना। मन्त्री महापती करकीना॥
भये ठाढ़ तेहिकेर निशाना। बलख देश महँगयो बखाना॥
लाग कपट तें साज बढ़ावै। जहँ जहँ मीतमोलागबोलावै॥
आपरहा सेवा चितलाई। दिन दिनतें परतीति बढ़ाई॥
ऐसामीत काज नहिं करै। क्षणयकबार छांड़नहिं टरै॥

कबहूं चँवर डोलावही कबहुँ जोड़कर हाथ।
निशिदिन न जरेदासभा छिनयक तजैनसाथ॥

भई प्रीति हंस के पाहां। अस सेवक दूसर कोइ काहां॥
बाहर आप सखी सुल्ताना। भीतर कंवल महा सुखमाना॥
तब वह कंवल सुवार बोलावै। आदर कर औ भोग जेंवावै॥
सुखमांगै पावै पुनि सोई। दूसरकहै सुनै नहिं कोई॥
सेवकन पीय भये परतीती। घर बाहर भइ सबकी प्रीती॥
जहां कोई बैरिन सुनि पावै। उठै धाय तेहि छार मिलावै॥
जस जस वै सेवा चित लावा। तस तस साज अधिककै पावा॥

बरस चारि बीते तहां ऊँचिभई बहु बात।
जोगी होइगेपाट के रहैं छांह परभात॥

भे निश्चिन्त हंस के मिन्ता। जहँ तहँ रहैं अधिक निश्चिन्ता॥
एकै बार जोहार न आवैं। पुनि सो राज काज चितलावैं॥
यक गुलबदन रहैं नित तीरा। कीतो मीर बहादुर मीरा॥
हंस सो वहिके पहरे रहै। छुट वह मीत न दूसर कहै॥

वह बैरी नित दांव लगावै। रहै दास गामिन चितलावै ॥
सिंधै सिंध साज वह कीन्हा। चहै सो दांव पिनाकर लीन्हा ॥
यक दिन नष्ट घड़ी जो धाई। चौकी वह बैरी की आई ॥

गगन रक्त छावा सवै अगम जनावा सोय।
राहु भानके आव तट मर्म्म न पावा कोय ॥

भा असवार नष्ट दल बाजे। चला साज दल जीतै बाजे ॥
जग जानै की जात जोहारै। का जानै की सज्जन मारै ॥
सहस पचास लोह दल लाये। रौंक बार सब ठाढ़ कराये ॥
पांच पुरुपनें गा मढ़माहां। बैठ अकेल हंस पुनि ताहां ॥
मीर बहादुर सबके साथा। ठाढ़ ओट कुछ पूंछै बाता ॥
देखि अकेल निकट सो आवा। रक्त प्यासने शीश नवावा ॥
आन मते पुनि लाग्यो काना। कीन अचेत भानु पुनि भाना ॥

भरमें भान अकेल तब लाग राहु जो कान।
थरथर होय कांपा जगत आज सूर फिरआन ॥

मारेसि तहां ऐंचिके छूरी। लागी हिये कालकी पूरी ॥
खैंचत गा उठि पंख पराना। उतर न दीन्ह गिरा भुइं माना ॥
निकसा मार रकत रतनारा। मोहिं दीन तेहि संग कुंवारा ॥
मीर बहादुर लखि सो धावा। साथिन वही ठांव बिलमावा ॥
तब गुलबदन धाय लिपटाना। जात कहां मारे जिव प्राना ॥
तब वें उलटि के छूरी मारा। औ गुलबदन जो हना कटारा ॥
जूझ पड़ा सो मार संघेला। मीर बहादुर लड़ै अकेला ॥

जूझा अन्त बहादुरहु मार सो दुरजन वीर।
पड़ी पुकार भीतर गढ़ी उठे धाय सब मीर ॥

भइ गढ़ मांझ असूझ अरूझा। उठि धावा तबहीं मह रूझा ॥

माह अली मिलि सब दल धावा। देखै वार लोह रन छावा॥
सुना जो हंस गयो गढ़ मारा। पैठा धाय सो खोल केंवारा॥
तबलौं कटक बार कहं रोंका। गोला बान कोटि यक झोंका॥
माहरूप के लाग्यो बाना। माहअली बहुतै अरझाना॥
लोहे लोह पड़ी घमसाना। लोथै लोथ उठी घर आना॥
माहअली जो पहुंचा बारू। पड़ी सो सेल खड्गकी मारू॥
अंत पंवरपर जूझसों दीन्ह मीत किन प्रान।
लड़ै सहूं दुर्जन कटक जान सो राज अपान॥
तबलौं वह बैरी करमोड़ा। तुरत काटिके फेंका रोड़ा॥
लखा कटक जो ठाकुर मारा। भइ बिन जीव छांड़ि संसारा॥
चहुंदिशि भा मीरनकर झोंपा। जोजेहिदिशिमेंतेहिदिशिकोपा॥
कोउ भागै कोउ अस्त्र न धारै। कोऊ मराई कोउ पुनि मारै॥
कोउ मांगै जिव दान न पावै। कोउ भागै फिर खड्ग चलावै॥
जो जेहि गली चलै वह भागै। ईंटै ईंट सो बरसय लागै॥
जो जेहि ठांव तहें सो मारा। रुंड मुंड भय हाट बजारा॥
लोथन खानौ बाटकी रक्त भरे सब ताल।
दीपक हंस बुझायगा जक्त रक्तसोंलाल॥
मंदिर मांझ जो पड़ी पुकारा। भान अलोप चंद्र भा कारा॥
नूरमाह जो चढ़ी अटारी। पूंछा का भै वार गोहारी॥
तबलौं सखी कहा पिव जूझा। सोई जूझ आज जग जूझा॥
सुनतै मूर्छि पड़ी मुइं नारी। जानौं स्वर्गते काठ पिटारी॥
टूटा तन पिंजर जिव छूटा। उड़ा सो प्रान प्रेम गढ़ लूटा॥
पिव पिव करत गई पिव साथा। सखी लाग पुनि कलपै माथा॥
कुमुदिन क्षार भई संघ पीऊ। कँवल उठी पिव सुनि वन जीऊ॥

कँवल हनै दरपै तुरत सरवर नीर झुरान।
निकसी पिउपर देनका हाथ लिये जिवप्रान॥

आई सखी लिये शशि नाहां। रक्त सेजपर सोवै जाहां॥
देखत लोथ पड़ी तहं धाई। छांड़ डफारि लिये लिपटाई॥
पिउ मो कारन भयो भिखारी। मैं का करौं कुलक्षण नारी॥
खोले शीश औ छिटके बारा। तन बाउर गरे लटकैं हारा॥
नैन रक्त उमड़ैं उलथाहीं। भंवर फिरैं बूड़ैं उतराहीं॥
तुम मोहिं लाग भयो पिउ जोगी। मैं का देउँ अहौं पिउ जोगी॥
जो मो पास प्रान पिउ तोरा। सो मैं देउँ और का मोरा॥

कहि यह वचन सिधार तब गई कंथके संग।
लोटैं लगीं सहेलियां मानों दीप पतंग॥

देखा शब्द जो चन्द्र सिधारी। चूंवै चरन औ भई भिखारी॥
नयन काढ़ि चरनन दोउ पूजा। देखि लोथ का देखौं दूजा॥
केहि गुन मरै चीन की नारी। सबै पतंग को थांभन हारी॥
कोई तो खड्ग हंसकी लीन्हा। शीश उतारि चरणपर दीन्हा॥
कोई शीश फोड़ भइ छारा। कोइ लै छुरी पेट महं मारा॥
कोई तो मुर्छि पड़ी भइ माटी। कोई तो ठाढ़ हिये की फाटी॥
घम घम गिरैं तीर सब मारैं। जहँ लौ चीन शहर की बारैं॥

चन्द्र सूर्य अथये दोऊ नखत भये अंधियार।
जगत महा परलौ भयो सून सकल संसार॥

रोवै ठाढ़ कँवल कर बारा। मात पिता जो छांड़ि सिधारा॥
बाहर जूझैं मीन घनेरा। भीतर सखी दिये को हेरा॥
मिलिगै ठाढ़ औ टेकि बैना। टपकैं आंसु न आवैं बैना॥
बोले आय नगर के लोगू। देखि संघार भये मन सोगू॥

घटघट सोग पड़ा तेहि शोका। काहु न भोग कीन यहि लोका॥
अमर सोग भयो तेहि राता। बनतें सूखि गये सब पाता॥
सोग समुद्र भयो जल खारा। काहु न संघ गयो संसारा॥

पंखि नहीं चागचरैं बालक पियैं न क्षीर।
शोक पड़ा बन चहुँदिशा जहँ लौं जन्म शरीर॥

मंत्रिन अंत कहा समझाई। अब कुछ शोच कहे नहिं पाई॥
लै सुत शाह पाट बैठावा। औ माथे तेहि छत्र फिरावा॥
व्याकुल लोग भये कुल माहां। पुनिकिन मता पिताकी छाहां॥
जोरे आन सेव सब सेहीं। राखि न सकैं प्रान बिन देहीं॥
नारिन कहँ सब सखिन उठावा। बदनं सवाँरि खात लय धावा॥
सब कहँ पाट बेवान चढ़ावा। निकसे लय बाहर पहिरावा॥
औ सुल्तान की साज सवारी। चले पाज. जहँ सुख सोनारी॥

जेजे चढ़े बियाह संघ तेते निकसे खाट।
मानो गौन चलाय के चले देश की बाट॥

आगे चला हंस कर पाटा। पाछे मीन चले चढ़ि खाटा॥
औ सब साज चले सुल्तानी। चढ़ि बेवान सों निकसी रानी॥
जहां मंदिर सोउनार सवाँरा। तहां खाट औ पाट उतारा॥
साज मंदिर औ कीन सो बानी। भरा अरगजा कुमकुम पानी॥
बीचें लै सुल्तान सो आवा। दोनों दिशि दुलहिन पौढ़ावा॥
पढ़पढ़ मंतर ऊपर मांटी। दीन औ शीश सेज जो ठाटी॥
चन्दन काटि वै भान छिपावा। ऊपर देहँ कपूर कलावा॥

पांतहि पांत सोवाय की देहँ उपर तें छार।
छारहि करत ओढ़ाय के अंत छारकी छार॥

कासिम छार सबै गुन पावा। छारहि लै मन जक्र फिरावा॥

छारहि महँ वह मोल समाना। छारहि वृक्ष जक्त अस जाना॥
छारहि जोति आन परकासी। छारहि बीरपती संन्यासी॥
छारहि भोग भक्त सब कीन्हा। छारहि योग जक्त सब लीन्हा॥
छारहि फिरै सकल संसारा। छारहि भई कीर्ति करतारा॥
छारहि अर्थ सकल जग साजा। छारहि गुन औगुन उपराजा॥
छारहि रूप सरूप देखावा। छारहि मोहिं जक्त बौरावा॥
छारहि ते साजा सबै छारहि गो सब भांज।
छारहि मांझ स्वरूप है देखि सो दरपन मांज॥
छार मिलाय चढ़ायो फूला। फिरा सो लोग वही सँग भूला॥
लागे राज काज संसारा। अरझै भोग भवन दुख सारा॥
पिता जो सोच मांझ बनजाई। फिरै लाग सुत केर दोहाई॥
सोवा हंस जाय बन माहाँ। रहिगे लोग जहां के ताहां॥
संघ गई जो जन्म बनाहीं। कैके मीत बीत संघ ताहीं॥
धन उनकी सब प्रीति सराहैं। जनौ प्रीतिकी ओर निबाहैं॥
जे जग आय प्रीति रस चाखा। गा सत राख जक्त गा साखा॥
कासिम प्रीति अलोप है कर सो मीत सों प्रीति।
अन्तमीत संघ जाइये जक्त जाय सब बीति॥
कासिम जक्त जान सब धोखा। जो जग भूल गयो सो खोखा॥
धोखा गगन फिरै दिन राती। धोखा देखि बजबजा भांती॥
धोखा नगर कोटि घरबारा। धोखा द्रव्य औ रूप सिंगारा॥
धोखा राजकाज सुख भोगू। धोखा सब लक्षण कुल लोगू॥
धोखा किया पुरुष जहँ पाई। धोखा अहै सबै दुनियाई॥
धोखा अहै भर्म पट दिया। छांड़ सो धोख खोल पट दिया॥
धोखा छांड़ि सुमिर करतारा। वही सो सोथ धोख संसारा॥

जगत छेंक धोखा सबै पलमहँ जाय बिलाय ।
कासिमभा सोई अमर रहा जो अलख लोभाय ॥

कासिम कथा जो प्रेम बखानी । बूझै सोई जो प्रेमी ज्ञानी ॥
कौन जवाहिर रूप सोहाई । कौन शब्द जो करत बड़ाई ॥
कौन हंस जो दरशन लोभा । कौन देश जेहि ऊंचे शोभा ॥
कौन पंथ जो कठिन अपारा । कौन शब्द जो उतरे पारा ॥
कौन मीत जिन संघ जिव दीना । कौनसो दुर्जन अनिष्ठ नकीना ॥
को ज्ञानी जिन बरनि सुनावा । कौनपुरुष जिन सुनचितलावा ॥
कौन दुष्ट जेहि दरश न जूझा । कौनभेद जेहि शब्दहिं बूझा ॥

पांच कथा पोथी भुवर परसन तेहि जगदीश ।
हमहिं बोल सुमिरै सोई कासिम दई अशीश ॥

कथा अपार बुद्धि अतिथोरी । रसना थांभ विनय करजोरी ॥
का तो ज्ञान जो बरनि सुनावै । कथा अपार पार को पावै ॥
थाके मुनि गंधर्व सहदेवा । थाके ज्ञान औ पवन परेवा ॥
चांद सूर्य नहिं वह सरपावैं । जाय पताल स्वर्ग चढ़िआवैं ॥
गगन फिरै सो भयो बुराना । तबहुं न खेल अलख करजाना ॥
तीनौ लोक खोज तेहि केरे । थाके दून नवो खंड हेरे ॥
पानी पवन आग औ छारा । वहिकी कीर्ति देखि सब हारा ॥

पूरिरहा सो सकल महँ तीनलोक जग मांह ।
तेहिकी कथा अपार है हम किमि पावैं थाह ॥

सत्य नाम सुमिरौं करतारा । जे यह नेस्त से हस्त संवारा ॥
जे अस बूंदते कीन समंदा । अन्त समुद्र बूंद महं बंदा ॥
बीजते कीन वृक्ष औ शाखा । अन्त सो मूल फूल महं राखा ॥
जे वय वास सुवास बनावा । कथा अपारहि पार लगावा ॥

जे असज्ञान जक्त ते साजा । वै मुख बोल ज्ञान उपराजा ॥
पुनि सो वही और कोउ नहीं । तीनौलोक पूर जगमाहीं ॥
वही डोलावै डोलीपाना । वही बोलावै बोली बाता ॥

वही किरति कीनांसबै वही दोउँ जगसांच ।
कासिमखोजौ वहीका नाम नित्त जगपांच ॥

कासिम जोबन बैस जो जाई । तौंकस मीन जो रहसभुलाई ॥
जोबन बैस खेल सबभावै । जेहिरँग खेल हाथ सो आवै ॥
चरननबल जो चलत नहारै । नैनन बल जो नैन जोहारै ॥
लंकहिबल जो तमकन खावै । पीठैबल जो धीर धरावै ॥
कामहिबल जो साधै योगू । रसनाबल जो बिलसै भोगू ॥
नैननबल जो निरखै जागी । रसनाबल जो सुमिरनलागी ॥
सरवनबल जो बूझैबाता । तौंकस भूलपड़ा रसगाता ॥

कासिम जोबन हाथहै चहै सो काज संवार ।
पुनि हस्तीबल जायगो कौन उठावै भार ॥

इति श्रीहंसजवाहिरभाषासम्पूर्णम् शुभम् संवत् १९६८ ।